

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व - बेहतर नेतृत्व - खुशहाल भारत

(Vision Document)

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट)



जो अपने स्वार्थों के खिलाफ संघर्ष करते हैं,

लोग उसकी तरफ आशा भरी निगाह से देखते हैं।

अपने स्वार्थों के खिलाफ संघर्ष करने वाले जनवादियों को,

मेरा शत्रु-शत्रु नमन ॥

(डा० संजय सिंह चौहान)

राष्ट्रीय अध्यक्ष

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट)

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, Email : drsanjayjanvadi@gmail.com

निजी प्रयास - सार्वजनिक हित
जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट)

हमारी नीति (Our Policy)

निरपेक्ष धार्मिकता!

उच्चतम् संस्कार!!

न्यूनतम सघर्ष!!!

हमारा विजन (Our Vision)

सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व

-

बेहतर नेतृत्व

हमारा मिशन (Our Mission)

व्यक्ति, सामाज और व्यवस्था का लक्ष्य सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण निर्धारित कर
स्वर्णिम युग की स्थापना।

हमारा लक्ष्य (Our Aim)

एक दुनिया - एक राष्ट्र

सरल व्यवस्था - सर्वश्रेष्ठ व्यवस्था

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट)

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

संस्कारवान, अनुभवी, समर्थ, समर्पित जनवादी पार्टी

(सोशलिस्ट) की राष्ट्रीय कार्य समिति के

नेतृत्वकर्ता



जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट)

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, Email : drsanjayjanvadi@gmail.com



देश के वंचितों, उपेक्षितों, शोषितों एवं अति पिछड़े, अति दलित वर्ग के लोगों:—

अपनी आखों से देखो।

अपने मुँह से बोलो।।

अपने पैरों से चलो।।।

(डा० संजय सिंह चौहान)

राष्ट्रीय अध्यक्ष

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट)

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट)

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, Email : drsanjayjanvadi@gmail.com

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट)

विषय-सूची

1. आमुख – डा० संजय सिंह चौहान – *राष्ट्रीय* अध्यक्ष ।
2. प्रस्तावना ।
3. देश के कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों पर जनवादी दृष्टिकोण ।
 - सर्वोच्च संस्कार की अवधारणा ।
 - I. शिक्षा नीति ।
 - II. धार्मिक नीति ।
 - IV. आर्थिक नीति ।
 - V. व्यक्तिवाद ।
 - VI. नक्सलवाद के प्रति जनवादी नजरिया ।
 - VII. विदेश नीति ।
 - VIII. जातिवाद ।
 - IX. आरक्षण के प्रति जनवादी नजरिया ।
4. जनवादी एवं साम्यवादी चिंतन में व्यवहारिक भिन्नताएं एवं सामानताएं ।
5. वर्तमान सामाजिक एवं राजनैतिक आन्दोलनों के सापेक्ष जनवादी नजरिया ।
6. भ्रष्टाचार एवं काले धन के प्रति जनवादी नजरिया ।
7. हमारे विजन को पूरा करने के लिए हमारा मिशन ।

देश का होगा कायाकल्प, जनवादी ही एक विकल्प

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, Email : drsanjayjanvadi@gmail.com

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट)

मो०नं० 9235703564, 9919017417, 9452438440

आध्यात्म का सर्वोच्च शिखर, कला और संस्कृति का अदभुत संगम, प्रकृति का अनमोल खजाना और मानवीन शक्ति में विश्व का सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश जो विश्व का दीपक हो, जिसकी संस्कृति और सभ्यता की रोशनी पूरे विश्व पर पड़ती हो, वह देश मानव विकास सूचकांक में 169 देशों में 119 वें स्थान पर एवं विषमता आधारित मानव विकास सूचकांक में यह 32 प्रतिशत और नीचे गिर गया हो तथा दुनिया के उन 20 भूखे देशों में शुमार हो जिनमें गृह युद्ध की आशंका बनी हुई हो। इसके साथ ही विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार अपने बाल मृत्यु की 48 प्रतिशत की दर के साथ अभी भी धाना, बांग्लादेश, सलोमन, आइलैण्ड, गुएना जैसे देशों से खराब स्थिति में हो। वही 230 के मातृ मृत्युदर के साथ यह जमैका, श्रीलंका, त्रिनिनाद, टोबैको, युक्रेन, और सउदी अरब देशों से भी बदतर स्थिति में हो तथा विश्व के 40 प्रतिशत कुपोषित बच्चे जिस देश में निवास करते हो जिनकी संख्या पड़ोसी देश नेपाल और बांग्लादेश से भी ज्यादा हो। यह प्रश्न महज कठोर टिप्पणी ही नहीं बल्कि देश के नीति निर्धारकों को कठघरे में खड़ा करने के लिए पर्याप्त है। जिस देश में करोडपतियों की संख्या में बढ़ोतरी 21 प्रतिशत की दर से हो रही है तथा विश्व के 100 पूंजीपतियों की सूची में 10 भारतीय एवं भारतीय मूल के हो उस देश में भूख से मौतें क्यों हो रही हैं? सर्वोच्च न्यायालय की इस टिप्पणी से शायद ही कोई असहमत हो कि हमारे ही देश में दो तरह का भारत नहीं हो सकता, एक समृद्ध और दूसरा भुखमरी का शिकार। सरकार चाहे जितना भी विकास का दावा करे किन्तु इस यथार्थ से नहीं मुंह मोड़ सकती कि दोनों तरह के भारत का निर्माण वर्षों से होता चला आ रहा है एवं इनके बीच का फासला लगातार बढ़ता जा रहा है। जिसके फलस्वरूप देश में समृद्धि भी बढ़ रही है तो इसके विपरीत निर्धनता और कुपोषण की जड़ें भी गहरी होती जा रही हैं।



अमर उजाला

यह मान्यता लम्बे अर्से से चली आ रही थी कि राष्ट्र निर्माण की परियोजनाओं क विकसित होने के साथ साथ जनता को उनके संवैधानिक अधिकारों का अवदान भी मिलता रहेगा तथा देश के आर्थिक चक्र (Economic cercle) में समग्र समाज समाहित होगा। परिणामतः गरीबी, बेरोजगारी और मानवीय दुर्दशा के सभी कारणों का उन्मूलन हो जायेगा। विकास की भौतिक द्रंदात्मकता जैसे – जैसे गति पकड़ेगी और उत्पादक शक्तियों का जैसे – जैसे विकास होगा वैसे –वैसे जाति, समुदाय, सम्प्रदाय, धार्मिक और विभिन्न सामन्ती अवशेषों की संकीर्ण संरचनायें ध्वस्त हो जायेगी तथा समाज में सौहार्द्रपूर्ण एवं समरसता का वातावरण पैदा होगा। किन्तु आज यह अनुमान गलत साबित हो चुका है क्योंकि किसी देश, राज्य या लोकतंत्र की प्रगति का पैमाना यही हो सकता है कि भौतिक विकास एवं आर्थिक समृद्धि का फल किस हद तक आम लोगों तक पहुंचा। यह ऊपर लिखित विवरणों से स्पष्ट हो जाता है।

यह सही है कि समाज के वंचित और निर्धन तबकों तक समृद्धि का प्रवाह धीरे – धीरे होता है, लेकिन इसका भी एक पैमाना होना चाहिए किन्तु हमारे देश में यह पैमाना कहीं नजर नहीं आता। दूसरी तरफ व्यवस्था और उस पर हानि वर्ग के द्वारा भी मिले आश्वासनों पर कभी गरीब, शोषितों, उपेक्षितों और पीड़ित जनता ने यकीन किया था किन्तु आज उन वादों की तरफ मुड़ कर एक नजर डालने पर हम देखते हैं कि कुछ वर्ग विशेष के निहित स्वार्थी तत्वों ने पूरी विकास प्रणाली (Development system) को अपने ही वर्ग विशेष को

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

विकसित करने की दिशा में मोड़ कर विकास के दायरे को संकुचित कर दिया है। जिस प्रणाली के समक्ष आज समूचा शोषित एवं उपेक्षित वर्ग हैरतअंगेज ढंग से बेबस पड़ा है। लम्बे अर्से तक धीरज एवं सहनशीलता दिखाने के बाद इन लोगों का यकीन डगमगाने लगा है और आज इस नतीजे पर पहुंचता जा रहा है कि अब शायद हमें अपना ख्याल खुद ही रखने के लिये तैयार हो जाना चाहिये, जिससे शोषण, दमन, भुखमरी और तिरस्कार विहीन समाज की तरह बढने वाले कार्यभार की पूर्ति की जा सकती है। परिणामतः इनके संघर्षों को दिशा देने के लिये एवं समाज में नैतिक मूल्यों पर आधारित समता, स्वतन्त्रता और न्याय स्थापित करने के लिये जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) का गठन अनिवार्य था।

बहरहाल हमारा देश ही नहीं पूरा विश्व राजनैतिक संकमण के दौर से गुजर रहा है। पूरे वैश्विक स्तर पर समाजवाद, साम्यवाद, लेनिनवाद, माओवाद, मनुवाद एवं धर्म निरपेक्षता तथा इन दर्शनों पर आधारित गठित राजनैतिक संगठनों एवं उनके संचालकों का संकीर्ण चिंतन, समाजिक असंतुलन को और वीभत्स रूप देता जा रहा है। ऐसे दौर में एक ऐसी विचारधारा की जरूरत थी जो समाज को जाति, धर्म, पंथ या वर्ग से उपर उठाकर मानवीय मूल्यों पर केन्द्रित संघर्ष की कल्याणकारी व्यवस्था दे, जिससे सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व का मालिक तथा समाज में आर्थिक रूप से समरसता लायी जा सके। इस जरूरत को भी पूरा करने के लिये जनवादी विचारधारा एवं इस पर आधारित एक राजनैतिक संगठन (जन राजनैतिक पार्टी) की अनिवार्यता काफी दिनों से महसूस की जा रही थी। इस कार्यभार को पूरा करने के लिये भी एक जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) का गठन ही बेहतर औजार साबित हो सकती थी। परिणामतः आधुनिक राजनैतिक परिदृश्य में सर्व हितकारी राजनैतिक विकल्प के रूप में जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) का गठन 23 अप्रैल 2004 को किया गया।

जन राजनीति के संघर्ष वाहक आमतौर पर कम्युनिष्ट ही माने जाते थे, परन्तु दुर्भाग्य तो इस बात का है कि समाज में व्याप्त असीमित गैर बराबरी, राष्ट्रीय सम्पदा की महालूट, चौतरफा घोटाला और भ्रष्टाचार, जातीय एवं सामन्ती शोषण के दौर में भी वामपंथी आन्दोलन अनवरत कमजोर होता जा रहा है एवं दक्षिण पंथ की दो पूंजीवादी ताकतों कांग्रेस और भाजपा के इर्दगिर्द ही राष्ट्रीय राजनीति घूम रही है। जिसका हल सभी वाम दलों का मोर्चा बनाने के बाद भी नहीं दिखाई पड़ता। ऐसे में जनवाद को केन्द्र में रखते हुए एक जनराजनैतिक मंच जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) का निर्माण अवश्यमभावी हो गया था। खासतौर पर भारत जैसे विशाल जनसंख्या एवं सामाजिक तथा धार्मिक विषमता वाले देश में जहां अमीरी और गरीबी के बीच का फासला तो असीमित है, किन्तु स्पष्ट

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

वर्गीय स्वरूप अभी तक नहीं उभर पाया है वहाँ पीड़ित समुदाय की राजनैतिक आकांक्षा को भी पूरा करने हेतु जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) की जरूरत थी।



जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) का निर्माण कम्युनिष्ट सिद्धान्त का निषेध नहीं बल्कि उसका विकास है क्योंकि जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) का चिंतन भौतिक विज्ञान (बाह्य विज्ञान) एवं आध्यात्मिक दर्शन (अन्तः विज्ञान) के बीच सामंजस्य पर आधारित होगा। जिससे समाज में आर्थिक समानता के साथ-साथ सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व का भी निर्माण हो सके, क्योंकि यह जरूरी है कि वर्तमान समय में व्यक्ति, समाज और व्यवस्था का केन्द्रीय विषय बदला जाये एवं भौतिक विकास के साथ-साथ आवाम के नैतिक उत्थान की परिस्थितियां पैदा की जायें, क्योंकि गरीबी है और इसका एक बहुत बड़ा कारण यह है कि गरीबों का बेहतर संस्कार नहीं है, जिससे वह खुद को तेजी के साथ उठा सके। दूसरी तरफ अमीरों के संस्कार का स्तर इतना ऊँचा नहीं है कि वह गरीबों के हित के लिये काम कर सके और स्वयं को अतिरिक्त धन के बोझ से मुक्त कर सुकून भरी जिन्दगी जी सके। इस तरह हम देखते हैं कि आर्थिक विषमता की जड में भी मनोविकृति ही है।

हमें पता है जीवन में आदर्श का क्या स्थान होता है। हम मानते हैं कि अव्यवस्था है। व्यवस्था के लिए बेहतर नेतृत्व चाहिए। बेहतर नेतृत्व के लिए बेहतर व्यक्तित्व चाहिए। बेहतर व्यक्तित्व का निर्माण कैसे हो इसका उत्तर केवल उच्चतम संस्कार के नीतिगत बिन्दु पर निर्भर करता है और सिर्फ इस बिन्दु को व्यक्ति, समाज और व्यवस्था का केन्द्रीय विषय बनाकर ही हम सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा धार्मिक व्यवस्था की सर्वोच्च स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए यदि हमें व्यवस्था बदलनी है तो व्यक्ति के साथ संस्थाओं और संगठनों को भी इस विषय को प्राथमिकता देनी ही होगी और यह बात वैश्विक स्तर पर लागू होती है।

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) के इस दस्तावेज में पार्टी की विचारधारा, आदर्श, केन्द्रीय विषय, लक्ष्य एवं शासन की नीति आदि के बारे में स्पष्ट उल्लेख किया गया है। यह दस्तावेज सिर्फ जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) का दृष्टिपत्र ही नहीं, अपितु आने वाले समय की बाध्यता है और वैश्विक स्तर पर व्यक्ति समाज और व्यवस्था के मार्गदर्शन का शास्त्र भी होगा।

व्यक्ति के लक्ष्य के अनुरूप उसकी मन स्थित रहती है। जो अपने बारे में भी नहीं सोच सकता वो पागल है। स्वयं के हित की प्रधानता रखने वाला स्वार्थी होता है व अपने परिवार के बारे में सोचने वाला स्वार्थी से बेहतर है। समाज के बारे में सोचने वाले की मानसिकता सामान्य सोच को व्यक्त करती है। राष्ट्र के बारे में सोचने वाले बड़ी सोच के वाहक है, दुनिया के बारे में सोचने वाला महान व्यक्ति होता है और वे लोग जो पूरी प्रकृति के हितैषी है, तत्त्ववेत्ता होते हैं। ऐसे लोग सर्वोच्च संस्कार के वाहक रहे हैं और रहेंगे। ऐसे महान व्यक्तियों एवं योद्धाओं के अतीत में अनेकों सुन्दर मिलन के नतीजे देख चुके हैं। जब नया इतिहास बना है, चाहे वो गुरु विश्वामित्र और मर्यादा पुरुषोत्तम राम का मिलन हो या जीवन के कुरुक्षेत्र में पान्चवन्य का उदघोष करने और गांडीवधारी अर्जुन को गीता का उपदेश देने वाले श्रीकृष्ण का हो या महान विचारक चाणक्य और चन्द्रगुप्त का हो अथवा सम्राट अशोक का 'बुद्धम् शरणम् गच्छामि' के प्रति समर्पण का हो अथवा महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरू का रिश्ता हो सभी जगह केन्द्र में अभिलाषा एक थी नवनिर्माण के सुबह की, मानवता की स्थापना की।

आज तत्त्ववेत्ता स्वामी कन्हैया दास महाराज का जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) के लिए सानिध्य मिलना, आने वाले समय में जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) के द्वारा स्वर्णिम युग की स्थापना की मिसाल होगा। बदलाव की उस मुहिम में हमें धैर्य, संयम और अनुशासन तथा सनातन परम्परा के ग्रन्थों को वैश्विक चिन्तन एवं स्वरूप का महत्व समझाकर बदलाव की शुरुआत खुद से ही करनी होगी का पाठ पढ़ाकर नई उर्जा हमारे जीवन को दी है। साथ ही मानवीय गुणों के विकास एवं मूल्यों की स्थापना में हमारी संस्कृति एवं सभ्यताओं (मिश्र, मेसोपोटामिया, सिन्धु, हडप्पा आदि) में समाहित सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व निर्माण की कला का बोध कराकर हमारे चिंतन और चरित्र को जो आयाम दिया है, निश्चित रूप से आज हम खुद को सौभाग्यशाली महसूस करते हैं एवं हमें पूर्ण विश्वास है कि आने वाले समय में पार्टी के नेतृत्व में सामाजिक, आर्थिक क्रान्ति के साथ – साथ जो सांस्कृतिक क्रान्ति होगी उससे पूरा विश्व इनके दर्शन एवं चिंतन से अवलोकित होगा।

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) के समस्त कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों से हम यह आशा करेंगे एवं हमें पूर्ण विश्वास भी है कि इस दस्तावेज के लक्ष्यों की पूर्ति के लिए कार्यक्रम एवं रणनितियां निर्धारित कर एक निश्चित समय के अन्तर्गत पूरा कर लेंगे। यही समाज, देश और विश्व की सम्पूर्ण मानव समाज के हित में है।

जय जनवाद

आपका शुभेच्छु

(डा० संजय सिंह चौहान)

राष्ट्रीय अध्यक्ष

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट)

प्रस्तावना



हम मानते हैं कि अव्यवस्था है, व्यवस्था के लिए बेहतर नेतृत्व चाहिए। बेहतर नेतृत्व के लिए सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व चाहिए, तो यह निश्चित है कि सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व के आलोक में ही राष्ट्र को बेहतर शासक दे सकते हैं और बेहतर शासक के नेतृत्व में देश को सर्वश्रेष्ठ व्यवस्था दी जा सकती है। मानव सभ्यता

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

के शुरुआती दौर के समय उतनी जटिल व्यवस्था नहीं थी जितनी जटिल व्यवस्था आज है। भौतिक विज्ञान भी बुलन्दी तक बढ़ते कदम, शिक्षा का सतत प्रसार एवं प्रचार के बावजूद आर्थिक विषमता, भ्रष्टाचार, जातिवाद, क्षेत्रीय भेदभाव आदि सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक समस्याएँ और गहरी होती जा रही है। जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) का मानना है कि ये तमाम समस्याएँ तब तक हल नहीं हो सकती जब तक समस्याओं के समाधान के प्रयास के केन्द्र में सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण नहीं होगा। धातु की खोज के पूर्व समाज के प्रतिभाशाली व्यक्तियों का लक्ष्य सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण यानि आत्मिक उन्नति थी। सर्वोच्च संस्कार ही व्यक्ति, समाज और व्यवस्था का केन्द्रीय विषय था। धातु ने वैज्ञानिक चिंतन को बदलना शुरू कर दिया। आज हमारा केन्द्रीय विषय समाज में सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण नहीं रहा तो हम यह भी देख रहे हैं कि तमाम भौतिक उपलब्धियों एवं उपभोग के स्तर बढ़ने के बावजूद भी समाज में नैतिक पतन, पारिवारिक विघटन एवं अराजकता का माहौल उत्तरोत्तर बढ़ रहा है।

यह लिखने की विशेष आवश्यकता नहीं है कि किस तरह से महाविस्फाट के पश्चात तारों, ग्रहों आदि का निर्माण हुआ और सूक्ष्म जीवों से लेकर क्रमिक रूप से गुणतम पेड़, पौधे और पशु पक्षियों के रूप में विकसित हुआ। इस क्रमिक विकास में ही वानर जाति की उत्पत्ति हुई। यह विकसित प्राणी ही मानव जाति के रूप में चिन्हित हुआ। मानव जाति के विकास क्रम को मोटे तौर पर हम प्रमुख रूप से तीन चरणों में विभाजित करते हैं वह निम्न है:—

- (1) प्रबुद्ध काल:— मानव जाति की उत्पत्ति से लेकर धातु काल से आगमन तक।
- (2) प्रतिभा काल:— धातु युग से लेकर आधुनिक दुनिया (संक्रमक काल) तक।
- (3) सामंजस्य काल:—आधुनिक काल से आने वाले स्वर्णिम युग तक।

प्रबुद्ध काल:—

मानव जाति के उद्भव के पश्चात जब मानव जाति का तीव्र रूप से बौद्धिक विकास होने लगा। तब चूंकि उसका जीवन पूरा प्रकृतिमय था, तो उसके मन में प्रकृति को जानने की तीव्र उत्सुकता पैदा हुई कि इसका प्रयोजन क्या है और प्रायोजक कौन है? लेकिन इसका जवाब उत्सुकता के अनुरूप इतना सहज नहीं था परन्तु उत्सुकता के फलस्वरूप मानव जाति का बौद्धिक विकास तीव्र गति

से हुआ, परन्तु इसका उत्तर न मिलने के कारण इनके पास और दूसरा कोई अन्य विषय न होने के कारण इस विषय पर इनका चिंतन जारी रहा । चूंकि इस समय के बौद्धिक व्यक्तियों के समक्ष जीवन को साधे रहने की कोई समस्या नहीं थी। श्रम विभाजन, जाति प्रतिस्पर्धा, मुद्रा का प्रादुर्भाव एवं बाजार व्यवस्था नहीं थी। सम्पूर्ण मानव जीवन प्रकृति पर निर्भर था और प्रकृति भी मानवीय आवश्यकता (भोजन, पानी, आवास आदि) उपलब्ध कराने में सक्षम थी। परिणामतः मानव के सामने कोई वर्ग संघर्ष भी नहीं था। चूंकि कार्ल मार्क्स के चिंतन का केन्द्रीय विषय सम्पत्ति (**Capital**) है। इसलिए उन्होंने इस युग को साम्यवादी युग की संज्ञा दी। मार्क्स के चिंतन का केन्द्रीय विषय सम्पत्ति होने के कारण इस युग के बौद्धिक व्यक्तियों के चिंतन और विषय पर मार्क्स द्वारा अध्ययन नहीं किया गया। उदाहरण स्वरूप जैसे वर्तमान आधुनिक सभ्यता में समाज के बौद्धिक (**Genious, scientist**) व्यक्तियों का चिंतन मानव सभ्यता को पृथ्वी ग्रह से मंगल ग्रह पर ले जाने के लिए प्रयासरत है। उसी तरह प्रबुद्ध काल की मानवीय सभ्यता में जो बौद्धिक (**Genious, scientist**) व्यक्ति थे उनके चिंतन का क्या विषय था? चूंकि जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) के चिंतन का केन्द्रीय विषय सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण है इसलिए इस युग के बौद्धिक व्यक्तियों के चिंतन पर विशेष बल दिया है। कोई और विषय उनके सामने न होने के कारण इस विशेष क्षेत्र की विशेषता हासिल होने के कारण उनमें तटस्थता का भाव आया जो सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व के निर्माण में सबसे अहम भूमिका निभाता है। परिणाम स्वरूप जब समाज में सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व के लोगों द्वारा प्रकृति के प्रयोजन और प्रायोजक के निमित्त चिंतन के फलस्वरूप लोगों के द्वारा प्राप्त अनुभवों को अभिव्यक्त करने की उत्कृष्टता हुई एवं अपने अनुभवों से आने वाली पीढ़ी को अवगत कराने की जिज्ञासा ने गुफाचित्र, भित्तिचित्र एवं रेखांकन के माध्यम से अपने अनुभवों को अभिव्यक्त करने का काम किया।

आधुनिक वैज्ञानिकों ने आनुवंशिकता के सिद्धान्त से जीनों का अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि मानव जाति की प्रथम उत्पत्ति अफ्रीका महाद्वीप में हुई। वहां से वह भारतीय महाद्वीप, अरब होते हुए कुछ दिन बाद उनकी एक शाखा यूरोप में तत्पश्चात् आस्ट्रेलिया और अन्ततः उत्तर एशिया के अलास्का होते हुए उत्तरी अमेरिका और अन्ततः दक्षिण अमेरिका तक जा पहुँचा। जिस समय मानव जाति की उत्पत्ति हुई उस समय इसकी आबादी सीमित थी। भोजन का विशेष अभाव नहीं था क्योंकि जंगलों के पर्याप्त होने के कारण फल-फूल से लेकर पशु-पक्षी तक सहज ही उपलब्ध थे। फिर ऐसा कौन सा कारण था कि जिसने उनको स्थान परिवर्तन से लेकर लंबी दूरी के प्रवास के लिए प्रेरित किया।

यह निश्चित है कि इस प्रवास का आधार कारण भोजन नहीं था (जैसा कि आधुनिक वैज्ञानिकों का मानना है), अपितु इसके मूल में तटस्थ व्यक्ति के निर्माण के दौरान प्राप्त अनुभवों एवं सिद्धान्तों को आने वाली पीढ़ी (**Generation**) को प्रेषित करने हेतु (उस समय लिपि की खोज नहीं हुई थी) रेखाचित्रों, गुफा एवं भित्ति चित्रों के द्वारा अभिव्यक्त करने का प्रयास है एवं इस भाव अभिव्यक्त करने के प्रयास के दौरान प्रवास (सही जगह एवं उचित पत्थरों व सुरक्षित भित्तियों की खोज में) का पक्का सबूत अफ्रीका महाद्वीप से लेकर दक्षिण अमेरिका तक भित्तिचित्रों एवं अन्य पुरातात्विक साक्ष्य का काल एवं मानव समाज का लंबा अंतर, महाद्वीपीय प्रवास से बिल्कुल मेल खाता है। यह अलग बात है कि आज के वैज्ञानिक इस प्रवास का कारण भोजन संबंधी खोज बताते हैं, क्योंकि आज के बौद्धिक लोगों के चिंतन का वह स्तर नहीं है कि उनकी कृतियों द्वारा अभिव्यक्त की गयी अभिव्यक्ति में समाहित चिंतन को समझ सके क्योंकि इनकी कृतियों में जो तटस्थ व्यक्तित्व निर्माण का चिंतन है उस दृष्टिकोण (**Angle**) से उन चित्रों को भी आधुनिक बौद्धिक व्यक्ति ने देखा ही नहीं, क्योंकि इनके चिंतन में भौतिकता एवं भोगवादी चिंतन की प्रधानता है एवं अन्तः विज्ञान के प्रति उदासीनता है। जबकि प्रबुद्ध काल के बौद्धिक व्यक्तियों के चिंतन का एकमात्र विषय "तटस्थ चिन्तन की अवस्था के द्वारा सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण" था, दूसरा कोई विषय नहीं था। परिणामतः उस काल के ज्यादातर व्यक्ति बेहतर व्यक्तित्व के मालिक थे इसलिए यह काल प्रबुद्ध काल था ।

2. प्रतिभा काल :-

प्रबुद्ध काल में भाव अभिव्यक्ति को अभिव्यक्त करने के प्रयास के दौरान जो उनकी अभिव्यक्ति के साधन थे और उनकी जो कृतियां थी। पत्थरों एवं प्राकृतिक रंगों एवं हड्डियों के माध्यम से किया वही एकमात्र साधन थे । लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व (2500 B.C.) तांबे धातु की खोज हुई जिसका उपयोग मनुष्य बहुआयामी ढंग से कर सकता था। धातु नाम के चमत्कारी खोज के पश्चात आकास्मिक ढंग से बड़े पैमाने पर उपयोग करने की स्थिति में ला दिया ।

अब मानव सभ्यता प्रबुद्धकाल से प्रतिभाकाल में आ गयी। सभी प्राचीन सभ्यताएं मिश्र, मेसोपोटामिया, हडप्पा, चीन जो समकालीन थी की नींव सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व के निर्माण के चिन्तन को अभिव्यक्त करने के लिए डाली । मनुष्य ने अपने मष्तिष्क का उपयोग इस काल में ही किया। अन्तः विज्ञान

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

(सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व निर्माण की कला) सर्वोच्च शिखर पर था। भाव अभिव्यक्ति के प्रयास के दौरान कई सभ्यताओं (मिश्र, मेसोपोटामिया, हडप्पा, सिन्धु , मोहनजोदडो) एवं कलाकृतियों (पिरामिड) आदि का निर्माण हुआ, जो आज मानव के लिए एक बड़े आश्चर्य से कम नहीं है। इसलिए इस काल को प्रतिभा काल कहते हैं।

धातु की खोज ने आदमी की जीवनशैली एवं चिंतन पर गहरा प्रकाश डाला। धीरे-धीरे अन्तः विज्ञान के साथ-साथ बाह्य विज्ञान (भौतिकवादी एवं भोगवादी चिंतन) का पदार्पण हुआ। आहिस्ता – आहिस्ता भौतिक विज्ञान उत्तरात्तर विकास के साथ समाज के लिए अन्तः विज्ञान गौण होता गया और बाह्य विज्ञान स्थापित होता चला गया। आज बाह्य विज्ञान के क्रमिक विकास का ही परिणाम है कि हम मंगल ग्रह पर बस्तियां बसाने के सार्थक प्रयास में लगे हुए हैं। आज हम बैठकर तटस्थता से मूल्यांकन कर सकते हैं कि अन्तः विज्ञान की उपेक्षा करके और सिर्फ बाह्य विज्ञान का उपयोग एवं सम्मान करके मानव जाति ने क्या खोया और क्या पाया है?

3. सामंजस्य काल (स्वर्णिम युग की स्थापना):—

प्रबुद्धकाल एवं प्रतिभा काल के पूर्वार्ध में जब मानव सभ्यताएं अपने विकास के चरम बिन्दु पर थी तब उस समय के बौद्धिक व्यक्तियों द्वारा और अपने अनुभव से व्यक्ति को देखने मात्र (आंख, चेहरा आदि) से आदमी के व्यक्तित्व को पहचाने लेते थे, क्योंकि ये उनके चिंतन के विषय के अन्तर्गत था और यह विषय उस समय के व्यक्ति, समाज और व्यवस्था (शासन) के केन्द्र में भी था। आज व्यक्ति, समाज और व्यवस्था के केन्द्र में प्रति व्यक्ति आय बढ़ाना एवं उपभोग का स्तर ऊँचा करना लक्ष्य है तो परिणाम स्वरूप आज समान्यतः लोग दोहरे व्यक्तित्व के साथ जी रहे हैं। तमाम भौतिक उपलब्धियों एवं उपभोग का स्तर उठने के बावजूद समाज कितना अव्यवस्थित, भयकान्त, आपाधापी, असंतुष्ट, मनोविकृति, अन्धवाद, आतंकवाद, राष्ट्रीय उन्माद, नैतिक पतन, पारिवारिक विघटन एवं निम्न स्तरीय सोच ने घातक हथियारों के जखीरे पर बैठे मानव की दरिद्रता के हद तक की भौतिक लालसा ने उस काबिल भी नहीं छोड़ा है कि वह सोच सके कि कब उसका भीषण रूप से दुरुपयोग हो जाय और सामूहिक रूप से नष्ट हो जाए। अब मानव सभ्यता उस बाध्यता के काल में पहुंच गया है कि वह अन्तः विज्ञान (तटस्थ व्यक्तित्व निर्माण के चिंतन की कला) और

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

बाह्य विज्ञान (भौतिकवादी एवं भोगवादी चिंतन) को समान महत्व दें अथवा स्वयं को नष्ट कर लें।

सामंजस्य काल में मानव सभ्यता को स्वर्णिम युग में पदार्पण के लिए यह जरूरी है कि शासक एवं शासन में शामिल व्यक्ति बेहतर से बेहतर व्यक्तित्व का मालिक हो। व्यवस्था (शासन) में शामिल व्यक्ति बेहतर व्यक्तित्व का स्वामी है या नहीं आज भौतिक विज्ञान की मदद से भी जैसे झूठ पकड़ने वाली मशीन **I.G.G. Test, Narco Test** आदि के द्वारा बेहतर उपयोग किया जा सकता है, क्योंकि शासक वर्ग के द्वारा वैज्ञानिकों को इस तरह के भौतिक अविष्कार के लिए विशेष संरक्षण नहीं मिल रहा है, इसलिए जिस तेजी के साथ इनका विकास होना चाहिए नहीं हो पा रहा है। यह निश्चित है कि आज ऐसी परिस्थितियां बन रही हैं एवं आने वाले समय में बनेगी कि इन्हें संरक्षण देने के लिए शासक बाध्य होगा। अन्ततः बाह्य विज्ञान जो अन्तः विज्ञान के उपेक्षा का कारण बना अन्तः विज्ञान को स्थापित करने में सबसे अहम भूमिका निभाएगा। दोनों विज्ञान एक दूसरे के पूरक बनते हुए स्वर्णिम युग की रूप रेखा तैयार करेंगे।

दूसरे पहलू से अगर देखें तो समाज में अव्यवस्था का मूल कारण विभिन्न क्षेत्रों की विशेषता निर्धारित करते समय केन्द्रीय विषय का अभाव होना। वर्तमान में अध्ययन के सभी क्षेत्रों का केन्द्रीय विषय अलग-अलग है। परन्तु जनवादी पार्टी (सो0) की स्वर्णिम युग की संकल्पना में सभी विषयों का केन्द्रीय विषय सर्वोच्च संस्कार (सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण) ही होगा। जैसे :-

1. अर्थशास्त्र :- हम ऐसी आर्थिक व्यवस्था चाहते हैं जिसमें प्रतिव्यक्ति आय बढ़ाने के साथ-साथ सर्वोच्च संस्कार को स्थापित करने में प्राथमिकता हो यह अर्थशास्त्र का उद्देश्य एवं अध्ययन का विषय भी होगा।

2. राजनैतिक शास्त्र:- ऐसी राजनैतिक व्यवस्था जिसमें व्यक्ति, समाज और सरकार का रास्ता सर्वोच्च संस्कार की ओर जाता हो यही राजनैतिक शास्त्र का उद्देश्य एवं अध्ययन का विषय भी होगा।

ऐसी ही समाज शास्त्र, दर्शन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, मनोविज्ञान आदि का केन्द्रीय विषय भी सर्वोच्च संस्कार ही होगा जिससे स्वाभाविक ही है कि एक केन्द्रीय विषय होने के पश्चात तमाम विषय अपना वास्तविक लक्ष्य प्राप्त करेंगे। परिणामतः भौतिक प्रगति के साथ-साथ व्यक्ति बेहतर व्यक्तित्व का मालिक होगा। व्यक्ति, समाज और व्यवस्था नैतिक लोगों के

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

हाथों में होगी। लोग अधिकतम सुख, आनन्द एवं बेहतर स्वास्थ्य के साथ स्वर्णिम युग में प्रवेश कर लेंगे।

जातिवादी और वर्गीय दृष्टिकोण जो नकरात्मक पहलू है, के चिंतन के माध्यम से हम स्वर्णिम युग की आधारशिला नहीं रख सकते। हमें तटस्थ होकर चिंतन करना होगा और सारी समस्याओं के मूल में सर्वोच्च संस्कार के चिंतन का अभाव होना निर्धारित करना होगा। जैसे गरीबी है उसका एक बहुत बड़ा कारण है कि गरीबों का बेहतर संस्कार नहीं है जिससे वह खुद को बहुत तेजी से उठा सके। वही दूसरी तरफ अमीरों के संस्कार का स्तर इतना नहीं है कि वह गरीबों के हित के लिए काम करे और स्वयं को अतिरिक्त धन के बोझ से मुक्त कर जिन्दगी का सम्पूर्ण रस और आनन्द ले सके। इस तरह हम देखते हैं कि आर्थिक विषमता की जड़ में भी मनोविकृति एवं गिरा हुआ संस्कार ही है।

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) जिस स्वर्णिम युग का सपना देखती है उसमें देशों के बीच की दीवारें हट जायेगी, सारा संसार एक हो जायेगा और हर व्यक्ति यह सोचकर काम करेगा कि दूसरों के लिए क्या अच्छा है क्योंकि जब तक यह होता रहेगा, एक मनुष्य के द्वारा दूसरे मनुष्य का तथा एक राष्ट्र के द्वारा दूसरे राष्ट्रों के बीच प्रतिस्पर्धा एवं शोषण होता रहेगा। तब तक उससे उत्पन्न होने वाली पीडाओं और अपमानों से मानव सभ्यता को नहीं बचाया जा सकता एवं स्वर्णिम युग (**Golden Period**) का सूत्रपात करने के बारे में की जाने वाली धारणाएं ध्वस्त हो जायेगी, क्योंकि सीमाओं में बंधकर शासक, शासन करेगा या सोचेगा तो अन्ततः दूसरे राष्ट्रों को नुकसान पहुंचाएगा एवं शासक स्वयं प्रतिस्पर्धी व्यक्तित्व का मालिक बन जायेगा। परिणाम स्वरूप अपना एवं राष्ट्र दोनों का अहित करेगा जैसे हिटलर व मुसोलिनी आदि ।

जनवादी पार्टी का दृष्टिकोण:—

जब देश में राजतंत्र था उस समय भी देश का आम आदमी समाज की विकास की मुख्यधारा में नहीं था। शोषण, दमन, जातीय एवं नस्लीय भेदभाव उसके हक में था। आज हमारे देश में लोकतंत्र है तो क्या आम आदमी हाशिये पर नहीं है? समाज में शोषण, भेदभाव दमन, जातिवाद, नस्लीय हिंसा , आर्थिक असमानता खत्म हो गयी ?

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) ऐसा मानती है कि शासक निर्धारित करने की विधि (**Method**) बदल देने से इन समस्याओं का सामाधान संभव नहीं है। जब

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

तक शासक का चरित्र एवं चिंतन सर्वोच्च स्तर का नहीं होगा। आर्थिक एवं सामाजिक विसंगतिया बढती रहेगी तथा इसके साथ जब तक शासन का केन्द्रीय विषय प्रति व्यक्ति आय बढाने के साथ साथ हर नागरिक का संस्कार भी उठे इन दोनों बिन्दुओं को आधार बनाते हुए योजनाओं का निर्माण नहीं होगा तब तक सामाजिक विकृतियां खत्म नहीं होंगे। भारत के शासन तंत्र के विभिन्न पहलुओं पर जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) का अपना अलग नजरिया है जिसका विस्तृत वर्णन करना आवश्यक समझता हूं।

शिक्षा नीति:—

शिक्षा सुधार के लिए भारत सरकार द्वारा बने शिक्षा आयोग (कोठारी आयोग-1964-66) ने पड़ोसी स्कूल की अवधारणा दी जिसके मायने है कि हर स्कूल का अपना एक पड़ोस होगा। उसके अन्तर्गत रहने वाले सभी बच्चे उस स्कूल में पढ़ेंगे चाहे वे किसी भी जाति, सम्प्रदाय, मजहब, आर्थिक हालात से संबंधित जैसे कलेक्टर, विधायक, उद्योगपति, चापरासी व खेतिहर मजदूर सभी के बच्चे उसी स्कूल में पढ़ेंगे ताकि स्कूलों में कोई भेदभाव न हो। सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकजुटता बनाने के अलावा इस प्रस्ताव के समर्थन में दो अतिरिक्त महत्वपूर्ण तर्क पेश किये जा सकते हैं।

1. पड़ोसी स्कूल बच्चों को उम्दा शिक्षा इसलिए देगा क्योंकि हमारे मत में सभी लोगों के साथ जीवन के अनुभवों को बांटना अच्छी शिक्षा का तत्व है।

2. ऐसे स्कूल स्थापित करने से सम्पन्न सुविधा-भोगी एवं ताकतवर वर्ग सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था में दिलचस्पी लेने के लिए मजबूर होंगे जिसके चलते उसमें तेजी से सुधार लाना संभव हो जायेंगे। (शिक्षा आयोग-कोठारी आयोग) 1964-66 खण्ड -10.19 से)।

किसी भी देश के सारे नागरिकों का शिक्षित होना उस देश के विकास की पहली शर्त है। भारत का हर बच्चा और हर नागरिक शिक्षित हो ऐसा ही सपना भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों एवं आधुनिक भारत के निर्माताओं ने देखा था परन्तु आज की शिक्षा व्यवस्था एवं प्रणाली जिसे आज की शासन व्यवस्था ने अपना रखा है। उससे एक तरफ शिक्षा का तेजी से निजीकरण हो रहा है एवं शिक्षा का बाजार बनता जा रहा है तो दूसरी तरफ सरकारी शिक्षा की हालत लगातार बिगड़ती जा रही है। यह महज संयोग ही नहीं है अपितु इसके

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

पीछे सरकार की सोची समझी नीतियां और अन्तर्राष्ट्रीय ताकतें भी जिम्मेदार है। वर्तमान भारत सरकार द्वारा शिक्षा अधिकार विधेयक के साथ साथ शिक्षा में निजी पूंजी निवेश को बढ़ावा देने और विदेशी शिक्षण संस्थाओं को देश में अनुमति दी जा रही है इससे सरकार की मंशा स्पष्ट होती जा रही है कि वह शिक्षा को मुक्त बाजार बनाना चाहती है।

शिक्षा में भेदभाव बढेगा और शिक्षा महंगी होती जायेगी तो देश में साधारण परिवार, किसान ,मजदूर के बच्चों के लिए शिक्षा में आगे बढने के दरवाजे खुलेंगे या बंद हो जायेंगे? केन्द्रीय विद्यालयों, नवोदय विद्यालयों एवं सैनिक स्कूलों आदि से यह साबित होता है कि सरकार चाहे तो स्कूलों की व्यवस्था, शिक्षा एवं प्रशासन अच्छे से चला सकती है लेकिन यह सवाल है कि यह बेहतर शिक्षा देश के सारे बच्चों को क्यों नहीं दी जा सकती है? मुट्ठी भर बच्चों को (जो स्कूली बच्चों का एक प्रतिशत भी नहीं होंगे) चुनकर सरकार उसके लिए तो पूरे साधन जुटा लेती है लेकिन बाकी बच्चों को भूल जाती है। जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) यह मानती है कि "हम क्या मानें कि कुछ बच्चों में ही प्रतिभा है, बाकी सब नालायक है? हर बच्चे में कुछ न कुछ प्रतिभा छिपी होती है, दोष उसका नहीं हमारी व्यवस्था का है जो उसकी प्रतिभा को पहचानने में असफल रहती है। उसे पढने एवं विकसित होने का अवसर नहीं देती है। " जो भी हो सम्पूर्ण सुविधा युक्त समग्र शिक्षा इस देश के हर बच्चे का हक है। शिक्षा की समुचित व्यवस्था की जिम्मेदारी सरकार की होगी, बच्चे की परिवार की नहीं होगी। देश के सारे बच्चों को एक समान शिक्षा की प्रणाली में शिक्षित किया जायेगा।

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) यह मानती है कि शिक्षा योग्यता को बढ़ाती है। अगर आदमी चरित्रहीन हो तो शिक्षा और उसके अन्दर भ्रष्टाचार की क्षमता को बढ़ा देती है। आज समाज में भ्रष्टाचार का स्तर शिक्षा के स्तर के अनुरूप ही दिखाई पड़ता है। जो जितना ज्यादा शिक्षित है वह उतना ही बड़ा भ्रष्टाचारी है। जहाँ कम शिक्षा है वहा भ्रष्टाचार का स्तर भी कम है। भ्रूण हत्या, दहेज, घूसखोरी, अवसरवादिता, घरेलू हिंसा ये सारी विकृतियां उन्हीं परिवारों में ज्यादा हैं जहाँ शिक्षा का स्तर ऊंचा है। इससे यह साबित होता है कि शिक्षा हो मगर वह भी असंस्कारित हो तो शिक्षा भी समाज में विकृति ही पैदा कर रही है। जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) शिक्षा की उस व्यवस्था को लागू करेगी जिससे बच्चों का संस्कार उठे एवं विपरीत परिस्थितियों में उनका चारित्रिक पतन न हो। यही शिक्षा की केन्द्रीयता एवं शिक्षा शास्त्र के अध्ययन का विषय भी होगा क्योंकि

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

शिक्षा योग्यता को बढ़ाती है और आदमी चरित्रहीन हो तो शिक्षा और उसके अन्दर भ्रष्टाचार की क्षमता को बढ़ा देती है।

आर्थिक नीति :-

एक तरफ पूंजीपति वर्ग साधनों एवं संसाधनों पर आधिपत्य जमाता चला जा रहा है तो दूसरी तरफ शोषित वर्ग दिन प्रतिदिन गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी आदि का शिकार होता जा रहा है। पूंजीपतियों ने समाज में इस तरह से विकृत प्रतिस्पर्धा पैदा कर दी है कि मानवीय मूल्य भी नित्य प्रतिदिन गिरते चले जा रहे हैं। अमीरी और गरीबी के बीच की खाई निरन्तर गहरी होती जा रही है जिसमें दानों का अस्तित्व डूबता नजर आ रहा है। गरीब लोग गरीबी, तंगहाली एवं भूख से मर रहे हैं तो अमीर लोग भय एवं अराजकता में जी रहे हैं, क्योंकि इनके द्वारा पैदा की गयी असमानता से उपजे असंतोष के कारण उग्रवाद, आतंकवाद, नक्सलवाद आदि रूपों में शोषित वर्ग संगठित होकर इनके विरुद्ध हिंसा पर उतारू होता जा रहा है। इस प्रकार दोनों के अस्तित्वों पर खतरा बना हुआ है। इसका जिम्मेदार सीधे तौर पर व्यवस्था एवं व्यवस्था पर हावी वर्ग एवं सियासी राजनैतिक पार्टियां ही हैं।

समाज में अव्यवस्था का मूल कारण किसी भी केन्द्रीय विषय का निर्धारण न होना है। जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) का केन्द्रीय विषय सर्वोच्च संस्कार है इसलिए हम ऐसी आर्थिक व्यवस्था चाहते हैं जिसमें सर्वोच्च संस्कार को स्थापित करने में प्राथमिकता हो। यही अर्थशास्त्र का उद्देश्य एवं अध्ययन का विषय भी होगा। व्यक्ति के पास आवश्यकता से कम धन का होना उसके सर्वोच्च संस्कार में बाधक है तो इसके विपरीत आवश्यकता से अधिक धन भी आदमी के नैतिक पतन का प्रमुख कारण है अर्थात् धन की कमी एवं अधिकता दोनों ही सर्वोच्च संस्कार में बाधक हैं।

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) गरीबी को इसलिए दूर करना चाहती है, क्योंकि आर्थिक किल्लत के अभाव में बेहतर संस्कार नहीं दिया जा सकता। वहीं दूसरी तरफ आवश्यकता से अधिक धन या अमीरी नहीं देखना चाहती है, क्योंकि आवश्यकता से अधिक धन जैसे ही आदमी के पास होगा, उसके संस्कार का पतन होना शुरू हो जायेगा। जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) अमीरों के प्रति भी सकारात्मक (**Positive**) ख्याल रखती है। हम अमीरों के शोषण की बात नहीं करते, हम इनको बेहतर व्यक्तित्व एवं खुशहाल जीवन देना चाहते हैं क्योंकि इनके पास

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

सारा धन रहते हुए भी जीवन के रस, आनन्द नहीं ले पा रहे हैं और सर्वोच्च संस्कार के शिखर की ओर नहीं जा रहे हैं। यह इनका सबसे बड़ा दुर्भाग्य है। हम इनके दुर्भाग्य को खत्म करना चाहते हैं। इनको आवश्यक उपभोग से वंचित करके इनको सर्वोच्च संस्कार दिया जा सकता है। कम्युनिष्ट कहता है शोषकों का शोषण करो किन्तु हम इनको इस दृष्टिकोण से नहीं देखते हैं, क्योंकि जहाँ घृणा होगी वहाँ ईमानदारी से निर्णय नहीं लिया जा सकता। जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) के पास घृणा का कोई स्थान नहीं है क्योंकि अमीरी और गरीबी का फासला कम भी है और वह असंस्कारित हो तो वह भी समाज में आराजकता ही पैदा करेगा।

व्यक्तिवाद :-

महापुरुषों की आड़ में स्वार्थी तथ्य जातिवाद, समुदायवाद, क्षेत्रवाद एवं संकीर्णतावाद को संरक्षण देते हैं तथा इनकी आड़ में अपनी स्वार्थपूर्ति करते हैं। यह निर्विवाद विषय है कि कोई भी महापुरुष (बुद्ध, महावीर, इसा, मोहम्मद साहब, नानक, श्री रामचन्द्र, श्रीकृष्ण आदि) अपनी मूर्ति लगवाने, स्तुति और महिमागान अपने मरणोपरान्त नहीं करवाना चाहता, यह तो मूढ़ एवं स्वार्थी तत्वों की स्वयं की उपज होती है। समाज के निर्माण में हर एक का अलग अलग महत्व है। वह मजदूर किसान हो या महान वैज्ञानिक, वह जूते सिलने वाला मोची हो या सीमा पर रक्षा करने वाला सैनिक, सबकी महत्ता बराबर है और सब एक दूसरे के पूरक हैं इसलिए विशेष सम्मान की बात ही बेईमानी होगी। व्यक्तिवाद के चलते मनुष्य इस तरह मूढ़ हो जाता है कि वह बेहतर भविष्य की कल्पना सार्थक रूप से नहीं करता है। व्यक्तिवाद की यह पराकाष्ठा ही है कि मरणोपरान्त तो क्या जीते जी शासक अपनी नेम प्लेट और मूर्तियाँ स्थापित कर (सुश्री मायावती, सद्दाम हुसैन— इराक आदि) स्वयं उद्घाटन कर स्वयं को स्थापित करने में लगे हैं। जब इस तरह की घृणित परम्पराओं का अन्त हो जायेगा तो लोग बेहतर व्यक्तित्व का मालिक बनना चाहेगा परिणामस्वरूप उनका दोहरा व्यक्तित्व नहीं बन पायेगा। जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) व्यक्तिवाद को खत्म करना चाहती है। जिसके लिए निम्न उपाय करेगी—

1. व्यक्ति आधारित विशेष सम्मान एवं छुट्टियाँ समाप्त कर दी जायेगी।
2. पुस्तकों में व्यक्ति विशेष को स्थापित करने वाले पाठों को निकाला जायेगा।

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

3. व्यक्ति विशेष को मरणोपरान्त दिया जाने वाला विशेष सम्मान समाप्त कर दिया जायेगा।
4. नोटों, सिक्कों, कलाकृतियों पर व्यक्ति विशेष को स्थापित करने के प्रयास को बंद कर दिया जायेगा।
5. व्यक्ति विशेष के नाम को सार्वजनिक स्थलों से हटाया जायेगा एवं चौराहों तथा पार्कों में लगी महापुरुषों की मूर्तियों को हटाकर कला संग्रहालय में सुरक्षित कर दिया जायेगा।

धार्मिक नीति:—

मानव सभ्यता के सहस्रों वर्षों के इतिहास के बाद आज हम कहाँ खड़े हैं? हर विकास को मापने के पैमाने हैं किन्तु सभ्यता को मापने का पैमाना क्या होगा? जिस तरह गति को हम कार में लगे गतिमीटर से माप सकते हैं, तापमान को थर्मामीटर से एवं आर्थिक विकास की दर विभिन्न निर्देशों और विश्लेषणों से किन्तु सभ्यता के विकास को नापने का हमारे पास कोई यंत्र और पैमाना नहीं है। यदि दूसरे ग्रह की कोई सभ्यता होती तो हम उस सभ्यता के सापेक्ष अपनी सभ्यता की तुलना कर लेते पर यह संभव नहीं है। समूचे आध्यात्मिक और धार्मिक साहित्य के वास्तविक चिंतन से दूर अपने मद में चूर यह समाज सभ्यता के विकास की ओर बढ़ रहा है या विकृति की ओर? आज पूरी मानव सभ्यता ऐसे चंद हाथों की गुलाम है जो खुद अज्ञानी एवं असभ्य है। हमें यह समझ लेना चाहिए कि राग, द्वेष, अहम, स्वार्थ, संकीर्णता और सत्ता की बुनियाद पर सभ्यता की इमारत खड़ी नहीं की जा सकती है। समय है स्लेट को साफ करने का और नये सिरे से इबारत लिखने का।

प्रकृति ने मानव को सबसे बड़ा गुण विचार करने का प्रदान किया है। इस गुण की सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति दर्शन है। यह सर्वोच्च संस्कार की उपलब्धि भी है कह सकते हैं। समय के प्रवाह में इस उपलब्धि को लोग प्राप्त करते रहे हैं, जिन्हें पैगम्बर, प्रोफेट, तत्ववेत्ता आदि के नाम से जानते हैं। आने वाली पीढ़ियों को सर्वोच्च संस्कार की ओर ध्यान आकृष्ट करने तथा उसकी प्राप्ति में सहायक भूमिका अदा करने के उद्देश्य से दर्शन के तत्वों को स्थापित करने हेतु जो परंपरा स्थापित की गयी है, वह सनातन परम्परा है। ज्ञान के सर्वोच्च स्थिति के अनुभव को लोक परंपराओं में ढाल कर संरक्षित करने की जो कोशिश की जाती है वह अन्ततः उद्देश्य के गौण हो जाने के पश्चात् परम्पराओं का रह जाना धर्म है। हिन्दू धर्म के रीति-रिवाज भी सनातन परम्परा का एक महत्वपूर्ण अंग है जिसका उद्देश्य गौण हो जाने के कारण आज आदर्श सामाजिक व्यवस्था देने में

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

अवरोध पैदा कर रहा है। आध्यात्म के दृष्टिकोण से प्रतिभा काल में जो चार वर्णों की परिकल्पना आदर्श व्यक्तित्व तथा सामाजिक व्यवस्था दे रहा था वह आज विकृति पैदा कर रहा है।

वेदों में वर्णित चार वर्णों की परिकल्पना सर्वोच्च संस्कार की ओर व्यक्तित्व को ले जाने के लिए थी। वर्ण की व्यवस्था को विभिन्न स्तर के व्यक्तित्व को निर्धारित करने के लिए की गयी थी। शूद्र, वैश्य, क्षत्रिय और ब्राम्हण चार वर्ण के रूप में व्यक्तित्व को विभिन्न स्तर पर बाँटा गया था, साथ ही पाचवें वर्ण के रूप में निषाद था।

जो लोग तत्त्वज्ञान के लिए लालायित नहीं हैं बल्कि अध्यात्म में रूचि न रहते हुए भी इस सम्बन्ध में दूसरे को गुमराह करने तथा स्वयं भी गुमराह होते हैं, शूद्र हैं। प्रकृति ही सब कुछ है के चिंतन में ये ग्रस्त रहते हैं। जन्म से सारे शूद्र ही होते हैं, स्वयं को शूद्रता के दलदल से निकालकर ब्राम्हणत्व प्राप्त कर लेना ही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। जिन लोगों को आध्यात्म में रूचि तो थी परन्तु गंभीर रूप से प्रयासरत नहीं थे, वैश्य कहलाये। तत्त्व ज्ञान को प्राप्त करने के लिए जो गंभीर थे तथा इसक लिए किसी भी स्तर के कठिन चुनौतियों का संघर्ष स्वीकार करने के लिए तैयार थे, क्षत्रिय कहलाये। सतत साधना एवं चिंतन के पश्चात तत्त्व ज्ञान की उपलब्धि से सर्वोच्च व्यक्तित्व को प्राप्त कर लेने वाले व्यक्ति ब्राम्हण कहलाये। कालान्तर में भौतिक विकास के साथ व्यक्ति समाज और व्यवस्था का उद्देश्य तत्त्व ज्ञान न होकर भोगवादी दृष्टिकोण हो गया। फलस्वरूप स्वार्थ में अंधे समाज को व्यवस्था देने वाले जिम्मेवार लोगों ने ही वर्ण व्यवस्था को गलत ढंग से परिभाषित किया।

प्रतिभा काल के दिनों में एक ही परिवार के सदस्यगण अपने व्यक्तित्व के कारण अलग अलग वर्ण के थे जैसे धृतराष्ट्र, विदुर, पान्दु ये तीनों सगे भाई थे किन्तु व्यक्तित्व के कारण एक क्षत्रिय, दूसरा शूद्र तथा तीसरा ब्राम्हण था। सामाजिक व्यवस्था में व्यक्ति का अध्यात्मिक चिंतन आहिस्ता-आहिस्ता गौण होना शुरू हो गया तथा नैतिक पतन के कारण व्यवस्था के नेतृत्वकर्ताओं ने अपने हितों के लिए परिवारों को ही विभाजित कर उसमें जन्मे व्यक्ति को ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र घोषित कर दिया। परिणाम यह हुआ कि प्रतिभा काल में जहां व्यक्ति, समाज और व्यवस्था का मार्गदर्शक तत्त्ववेत्ता ब्राम्हण थे। कालान्तर में भौतिक सोच तथा नैतिक पतन के साथ पागलपन के हद तक की मूर्खता ने धीरे-धीरे जड़ जमाना शुरू कर दिया। शूद्रों के हाथ में ही व्यवस्था का नेतृत्व आ गया और द्विज कहलाने वाले ब्राम्हण,

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

क्षत्रिय तथा वैश्य स्तर के व्यक्तित्व ही संदिग्ध हो गये, वो स्तर आज है भी या नहीं ? व्यक्तित्व के आधार पर पाचवें वर्ण के रूप में निषाद था । तत्त्व ज्ञान के पश्चात जो स्वयं को सांसारिक व्यवस्था में ढाल लेने के योग्य थे, निषाद कहलाते थे या वो जो आध्यात्म को गंभीर विषय मानकर उस विषय से स्वयं को अलग रख सांसारिक जिम्मेदारियों के प्रति ईमानदारी से कर्तव्य पालन कर रहे थे । ज्ञान से युक्त होकर ही निषाद यानि शोक से रहित हुआ जा सकता है या कर्म करने की प्रबल भावना से । दो विपरीत स्थितियों में रहते हुए भी निषादों को दोनों वर्ग ही, सामाजिक व्यवस्था के निर्माता थे ।

स्वर्णिम युग में प्राचीन वर्ण व्यवस्था की तरह आज ब्राम्हणवाद को स्थापित करने की आवश्यकता है । शंकराचार्य जैसे भ्रमित कथित धर्मगुरुओं एवं पंडों के रूप में धर्म के सर्वोच्च स्थान से लेकर गांव गलियों में स्थापित शूद्रों के खिलाफ जन आन्दोलन चलाकर अन्तः विज्ञान को पुनः स्थापित करना है । अन्तः विज्ञान को पुनः स्थापित करने वाले वेदों और अन्य शास्त्रों की गरिमा पुनः हमें स्थापित करनी होगी तथा इन शास्त्रों के वास्तविक चिंतन से लोगों को अवगत कराना होगा ।

हम विभिन्न धार्मिक संस्थानों, मन्दिरों के शोर्ष पदों पर कब्जा जमाये शूद्रों को हटाकर ही पुनः ब्राम्हणवाद को स्थापित कर सकते हैं । इन संस्थानों एवं स्थलों के पदों पर परम्परागत आरक्षण को समाप्त कर इन पदों पर दर्शन के विशेषज्ञों को आसीन करना ही होगा ।

वर्तमान परिवेश में हमारा धार्मिक चिन्तन अन्तः विज्ञान को स्थापित करने के लिए ही होगा जो सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व के निर्माण के लिए ही है । प्राचीन साहित्य एवं सभ्यताओं में वर्णित सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व के निर्माण के दरम्यान प्राप्त अनुभवों को चरित्र में ढालकर जो साहित्य का सृजन किया गया मूर्खों द्वारा हूबहू स्वीकारने से अन्त विज्ञान सिरे से खारिज हो जाता है । यही हाल दूसरे पक्ष का है कि उन प्राचीन साहित्यों को सिरे से खारिज कर और उसका गलत अर्थ लगाकर समाज को गुमराह कर रहे हैं । इस तरह हम देखते हैं अन्तः विज्ञान को स्थापित करने वाले साहित्यो एवं शास्त्रों को एक वर्ग द्वारा बगर समझे माथे पर शूद्रों (वर्तमान में ब्राम्हण एवं पंडा जाति के लोग) द्वारा ढोया जा रहा है तो दूसरी तरफ उसके विरोध करने वाले लोगों द्वारा बिना समझे पैरों तले रौंदा जा रहा है । अपवादों को छोड़ दिया जाये तो सभी प्रमुख धर्मों का उद्देश्य सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व निर्माण करने के लिए ही था और इसमें समाहित रीति रिवाज उस समय के परिस्थितियों के अनुरूप समाज को अनुशासन के दायरे में बांधने का था ।

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

बदली हुई परिस्थितियों में रीति रिवाजों को समय के साथ सामंजस्य की जरूरत है जो विभिन्न धर्मों के नेतृत्वकर्ताओं को मूढ़ता के चलते कूपमण्डूकता के घेरे में फंसा हुआ है। जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) हमारे सनातन परंपरा के साहित्य एवं सभ्यताओं में समाहित वास्तविक चिंतन को देश एवं दुनिया के सामने लाने का प्रयास करेगी जिससे धार्मिक अंधता को समाप्त कर समाज में बेहतर व्यक्तित्व का निर्माण संभव हो सके।

विदेश नीति :-

पुख्ता विदेश नीति के अभाव में हमारी कार्यवाही तथा प्रतिक्रिया दिशाहीन ही रह जाती है। आजादी के समय भारत एक मात्र ऐसा देश था जिसके पास अपना दृष्टिकोण था और वह अन्य देशों से बेहतर विदेश नीति का नेतृत्व कर रहा था, परन्तु 60 के दशक के मध्य तक अपने नागरिकों तथा बाकी दुनिया से किये गये भारत के अधिकतर दावे खोटे साबित हो चुके थे। एशिया के अन्य देश हमसे आगे निकल गये जिनमें जापान, चीन, दक्षिण कोरिया के अलावा ताइवान, इन्डोनेशिया जैसे छोटे- छोटे देश भी शामिल हैं। उनके यहां गरीबी की दर कम हुई, शिक्षा का स्तर ऊँचा उठा परन्तु भारत में आज भी दुनिया के सबसे अधिक गरीब, निरक्षर एवं कुपोषित लोग हैं। यहां तक कि कुछ अफ्रीकी देश भी भारत को पीछे छोड़ चुके हैं। इन सभी कारकों की वजह से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत का ओहदा कमतर हुआ और दुनियावी मामले में भारत का प्रभाव लगभग नगण्य रह गया है।

अपने पड़ोसी देशों के साथ भारत के रिश्ते बड़े या छोटे पड़ोसी की मानसिकता में उलझे रहे। छोटे देश भारत को संदेह की नजर से देखते हैं क्योंकि वह उन्हें कमतर आंकता रहा है। कभी कभी तो हम उनकी जरूरतों को नजरअंदाज करके निर्दयतापूर्वक कदम उठाते रहे हैं। हमारी अधिकतर नीतियों में दूरदृष्टि नहीं होती तथा विचारों की कमी रहती है। कुछ उदाहरण देखे जा सकते हैं— भारत ने बांग्लादेश को तो एक स्वतंत्र राष्ट्र बनाया परन्तु उसको उसके हाल पर छोड़ दिया। म्यांमार की लोकतांत्रिक ताकतों ने भारत का सहयोग चाहा परन्तु इसने तानाशाही शासकों का साथ देना बेहतर समझा। दिल्ली में पढी लिखी सूकी ने भारत से सहायता मांगी परन्तु भारत ने उसकी ओर से आँख मूंद ली। परिणामस्वरूप वह पड़ोसी सहायता के लिए चीन और पाकिस्तान की ओर मुड़ गयी। भारतीय राजनैतिक दल और समूह पड़ोसियों के साथ पारस्परिक

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

सम्बन्धों को सांप्रदायिक रंगत देने के आदि है और इस प्रक्रिया में रिश्तों को अधिक जटिल और अलगावपूर्ण बना देते हैं। ऐसा मुख्यतः मुस्लिम बहुसंख्यक पड़ोसियों के मामले में होता है। उनके दृष्टिगत हमारे देश के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप पर बहुत बड़ा प्रश्नचिन्ह लग जाता है। दुख की बात है कि सत्तारूढ सरकार और विपक्षी दलों में ही मूल्य आधारित कोई दूरदर्शितापूर्ण विदेश नीति नहीं है एवं वे अपना प्रत्येक पग मात्र राजनैतिक सत्ता प्राप्त करने की संभावना का आंकलन करके ही उठाते हैं। एक दुमूलक विदेश नीति एवं नरम राष्ट्र की छवि के कारण ही आज इटली ने भारत के साथ धोखाधड़ी की है। जाहिर है यह छवि एक दिन में नहीं बनी है। भारत का विदेश मंत्रालय लंबे वक्त से बेअसर दिखता रहा है कारण कि विदेश मंत्री का पद कुटनीतिक समझवाले व्यक्ति को देने के बजाय राजनैतिक रेवड़ी की तरह मिलता रहा है।

1952 में अमेरिका द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद में भारत को स्थाई सदस्यता देने के प्रस्ताव को नेहरू द्वारा ठुकरा दिया गया तथा इन्होंने आग्रह किया कि यह सीट चीन को देनी चाहिए। जब नेहरू ने अमेरिका के प्रस्ताव को अस्वीकार किया तो उनका तर्क था कि वे नहीं चाहते कि अमेरिका चीन को कमजोर करें। इस प्रकार हमने केवल अपने ही हितों को चोट पहुंचाया है तथा आज वही चीन हमारे सामने एक बड़ी समस्या के रूप में खड़ा है।

गुट निरपेक्ष आन्दोलन का पैरोकार देश दो महाशक्तियों के बीच (रूस एवं अमेरिका) पेन्डुलम की तरह पड़ा है और विश्व मंच पर अपनी तटस्थ एवं स्वतंत्र उपस्थिति दर्ज नहीं करा पा रहा है। पंडित जवाहर लाल नेहरू, मार्शल टिटो और कर्नल नासिर की पहल से लगभग 52 साल पहले बने गुटनिरपेक्ष आन्दोलन को एक सशक्त आवाज के रूप में देखा गया था। आधी सदी बीतने के बाद आज अधिकतर इसके सदस्य देश तटस्थ हो गये हैं तो यह भी कहीं न कहीं भारत की कूटनीतिक असफलता माना जा सकता है। आसियान, दक्षेस और कई अन्य अपेक्षाकृत छोटे मंच जिस पर दमदार स्थिति दर्ज कराकर विश्व स्तर पर भारत अपना महत्व बढ़ा सकता था, किन्तु भारत यह स्थिति भी पैदा नहीं कर सका।

पड़ोसी देशों के मामले में भी भारत की प्रतिक्रिया देखें तो उसमें भी आत्मविश्वास की कमी एवं दुलमुल नीति दिखायी देती है जबकि यह बहुत ही महत्वपूर्ण तथ्य है कि भारत अशान्त पड़ोसी देशों से घिरा हुआ है। दुनिया के सभी पड़ोसी देश अपने पास पड़ोस के बारे में स्पष्ट राय रखते हैं। ताजा उदाहरण म्यांमार का ले जहाँ जब सैन्य शासकों द्वारा लोकतंत्र समर्थकों का दमन किया जा रहा था तो जापान से अमेरिका तक ने उन पर दबाव बनाया एवं चीन

की भी सधी हुई प्रतिक्रिया थी कि वह म्यांमार का दूसरा ईराक नहीं बनने देगा। दूसरी ओर भारत की चुप्पी हमारी नीतियों पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करती है। तब यह प्रश्नचिन्ह और भी गहरा इसलिए हो जाता है कि दमन के केन्द्र में वह नेता आंग सांग सू की थी जिन्हें भारत सरकार ने 1999 में नेहरू शांति पुरस्कार से सम्मानित किया था और भारत ने मात्र इसे म्यांमार का आन्तरिक मामला मान लिया था। अगर हम इतने ही सहमे हुए हैं तो कैसे महाशक्ति बनने का सपना देख सकते हैं? अभी हाल ही में नेपाल में सत्ता बदली। अब सत्ता पर माओवादियों का दबदबा है। कहने की जरूरत नहीं है कि आज भारत के 11 राज्य (250 से अधिक जिले) इस विचारधारा के साये में पनपती अशान्ति के शिकार है। बावजूद इसके वहां ताजपोशी के लिए भारत सरकार के अधिकारित प्रतिनिधि भी गये हुए थे। नेपाल की राजशाही व्यवस्था भारत के हित में थी किन्तु राजा के संघर्षों के दौरान भारत चुप रहा। इसी तरह ईरान, ईराक और अफगानिस्तान के मामले में भारत सरकार ने जो फैसले लिए उन पर अमेरिका का साया स्पष्ट रूप से दिखायी देता है जबकि अफगान-पाक अराजकता से जन्मे आतंकवाद का जो खामियाजा भारत भुगत रहा है क्या वह अमेरिका, जापान और जर्मनी भुगत रहा है? क्या अफगानिस्तान में इन देशों के हितों और भारत के हितों में कोई अन्तर नहीं है?

सच कहा जाए तो भारत के पास अपनी कोई अफगान नीति नहीं है। अमेरिकी फौज वापसी के बाद अफगानिस्तान में जो उथल पुथल मचाने वाली है उसमें भारत की क्या भूमिका होगी। उसकी पूरी तैयारी हमारे पास अभी से होनी चाहिए या तो पाकिस्तान से मिलकर या अकेले हम अपने दम पर अफगान राष्ट्रीय फौज क्यों नहीं खड़ा करवा देते? इसके लिए अमेरिका पर हमारी सरकार दबाव क्यों नहीं डालती? भारत का ध्यान शायद इस लक्ष्य पर नहीं है कि चीन ने अफगान तॉंबे की खदानों पर तो अपना अधिकार जमा लिया है अब वह अफगान फौज और प्रशासन में भी अपना प्रभाव बढ़ाना चाहता है इसका फायदा किसको मिलेगा? भारत को या पाकिस्तान को?

माओवादियों की सरकार की वजह से नेपाल पर चीन का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। श्रीलंका, म्यांमार और मालदीव में चीन अपना प्रभाव फैलाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहा है जबकि भारत दक्षिणी एशिया की महाशक्ति की भूमिका नहीं संभाल सका तो उसकी विदेश नीति को सफल कैसे माना जायेगा? महाशक्ति बनने के सारे गुण भारत के पास हैं। बस इसे यथा योग्य दृष्टि चाहिए और तदनुसार रणनीति बनाने की जरूरत है। भारत के पास कौन सा बल नहीं है, भूजल, जनबल है, अर्थबल है, छविबल है, लोकतंत्र का बल है। यदि इसके

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

पास इच्छाबल हो या दृढ इच्छाशक्ति हो तो इसे सच्चे अर्थों में महाशक्ति बनने से कौन रोक सकता है?

आज दुनिया बुनियादी समस्याओं से बुरी तरह त्रस्त है एवं वैश्विक स्तर पर मानव समाज का एक बड़ा हिस्सा नारकीय जीवन जीने के लिए बाध्य है। यह कितने दुर्भाग्य की बात है कि जितनी धनराशि प्रति वर्ष खर्च कर इन समस्याओं से निजात पाया जा सकता है उससे पाँच गुना राष्ट्रों की सीमाओं और हथियारों की होड़ पर खर्च किया जा रहा है और करीब इतना ही किये गये शोध पर प्राप्त उपलब्धि के पश्चात पुनः उसी शोध पर, जैसे मानव 1969 में चन्द्रमा पर चरण रख चुका है परन्तु अपने तकनीक के बदौलत पुनः वहाँ पहुंचने के लिए राष्ट्रों के बीच आपाधापी मची है। इसके साथ ही विज्ञान के अन्य क्षेत्रों में भी यह बात लागू होती है। जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) की स्वर्णिम युग की संकल्पना में यह सोच है कि “एक दुनिया – एक राष्ट्र” की अवधारणा मूर्त रूप लेगी एवं अन्तराष्ट्रीय स्तर पर सभी राष्ट्रों द्वारा इस ओर प्रयास होगा तो बुनियादी समस्याओं के निदान में अर्थाभाव एवं अन्य जरूरतें स्वतः दूर हो जायेगी और जब सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण व्यक्ति, समाज और सरकार का लक्ष्य हो जायेगा तो इसी के आलोक में ही स्वर्णिम युग स्थापित होगा।

दुनिया भर में आतंकवादी हमे आतंकित कर रहे हैं। एक राष्ट्र इसे समाप्त करना चाहता है तो दूसरा संरक्षण दे रहा है तो क्या कभी ऐसे हालात में आतंकवाद समाप्त हो सकता है? इसका निदान तो एक दुनिया – एक राष्ट्र की अवधारणा में ही छिपा है।

नक्सलवाद :-

समाज का निर्माण मूल्यों से होता है जैसे आपस में समानता का बोध एक मूल्य है लेकिन अमीर बनने की चाह पैदा करने वाला विचार इस मूल्य को नेस्तनाबूद करने की कोशिश करेगा और तब तक करता रहेगा जब तक कि वह शिखर पर नहीं पहुंच जाता। अमीर बनने का विचार ही भ्रष्टाचार का वैचारिक श्रोत है जैसे तय किया गया है कि किसी को 10 प्रतिशत लाभ कमाने की इजाजत है। इसके विपरीत लाभ कमाने की खुली छूट ले लेने या देने की परिस्थितियां बनती है तो पूरा संतुलन बिगड़ जाता है और यह असंतुलन कितनी बड़ी गंभीर स्थिति पैदा करेगा। इनको सूक्ष्मतम ढंग से समझने की जरूरत है

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

क्योंकि आर्थिक शक्ति के संतुलित वितरण को अख्तियार किये बिना सामाजिक मूल्यों को स्थापित करने की सारी अवधारणाएं व्यर्थ है।

एक सभ्य समाज में हिंसा का समर्थन एक पागल ही कर सकता है लेकिन यह बात एक सभ्य समाज पर लागू होती है, भारत जैसे असभ्य और बर्बर समाज पर नहीं जिसका कण कण हिंसक है। यह दीगर बात है कि यह हिंसा सतह पर उस तरह नहीं दिखाई देती जिस तरह नक्सली हिंसा दिखाई देती है लेकिन सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक तंत्र में व्याप्त यह सूक्ष्म और परोक्ष हिंसा किसी भी तरह की प्रत्यक्ष हिंसा से ज्यादा त्रासद, खतरनाक और डरावनी है और जो कथित सभ्य लोग जिनकी जुबान हिंसा की आलोचना करते नहीं थकती वे इस परोक्ष एवं त्रासद हिंसा के सबसे बड़े पोषक एवं संरक्षक भी हैं। दुख तो इस बात का है कि तथा कथित समझदार लोगों को हिंसा रूपी वृक्ष की टहनियां तो दिखाई देती हैं लेकिन इनकी दिनों दिन गहरी होती जड़ें दिखाई नहीं देती। अन्ततः जब तक इस परोक्ष हिंसा के चरित्र को नहीं समझा जायेगा तब तक नक्सली हिंसा को भी नहीं समझा जा सकता।

नक्सली हिंसा को समझने के लिए यह जानना जरूरी है कि यह जाति प्रेरित हिंसा नहीं है जो भारत में प्रतिदिन सेकड़ों लोगों की जान लेती है। यह धर्म और कटरता प्रेरित साम्प्रदायिक हिंसा नहीं है जो करोड़ों लोगों की जिंदगियों को आग में झोंके रखती है। यह आतंकी हिंसा भी नहीं है जो हर साल हजारों बेगुनाह, बखबर आम लोगों की जिन्दगियों को गटक जाती है। यह वैसी अलगाववादी हिंसा भी नहीं है जो उत्तर पूर्व में दिखती रही है और खालिस्तान जैसे आन्दोलनों के दौरान दिखी थी जो हजारों निर्दोष लोगों की खून से रंग गयी थी। यह एक विचारधारात्मक हिंसा है जो राज्य एवं सरकार द्वारा पोषित वह हिंसा है जिसमें व्यक्ति गोली से नहीं मरता लेकिन निहित अन्याय और कुपोषण से उसका जीवन नष्ट हो जाता है। जीवन को साधे रखने के लिए सारे संसाधन उससे छिन जाते हैं। इसी निहित हिंसा के गर्व से नक्सलवाद जैसी हिंसा जन्म लेती है। भले ही मौजूदा शक्तिशाली देश व राज्य अगले कुछ महीनों, वर्षों में नक्सलवाद को कुचलने में सफल हो जायेंगे, लेकिन जब तक वह स्वयं अपना चरित्र नहीं बदलेगा। प्रत्यक्ष हिंसा के किसी न किसी रूप में उठने वाले उभार को नहीं रोका जा सकेगा। नक्सलवाद मौजूदा राज्य तंत्र और उसक भ्रष्ट अर्थ तंत्र तथा क्रूर समाज तंत्र के लिए चेतावनी के ऐसी घंटी है जिसे समय रहते सुन लिया जाना चाहिए।

हमारे लोकतंत्र ने जहाँ एक ओर भ्रष्टाचार का समाजीकरण किया जा रहा है तो दूसरी तरफ सारे सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक विग्रहों और विकृतियों को लोकतंत्र के चुनावी औजार में बदल दिया है। मतलब यह कि सामाजिक, धार्मिक स्तर पर जितनी भी बेहूदिया संभव है, वे सब मजे से चुनावी लोकतंत्र में खेल रही है। इस लोकतंत्र ने किसी भी स्तर पर किसी भी बेहूदगी से निपटने की अपनी क्षमता खो दी है। यानि सरकार और राज्य तंत्र समाज के किसी भी स्तर पर किसी भी हिस्से में पनप रही किसी भी विकृति के निराकरण की शक्ति हमारी वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में नहीं बची है। पिछले वर्षों में जहाँ हमने नक्सलवादी आन्दोलनों को फैलते – पसरते और अधिक मजबूत होते देखा है तो दूसरी ओर अन्ना हजारे, बाबा रामदेव जैसे लोगों के नेतृत्व में चले बदलाव के लोकतांत्रिक लक्षित आन्दोलनों की विफलताओं ने फिर एक सवाल को धार दिया है कि क्या शांतिपूर्ण जन आन्दोलनों के द्वारा लोकतांत्रिक माध्यम से कोई सार्थक परिवर्तन संभव है? वहीं नक्सलवादी आन्दोलन के भी अपने भटकाव और विचलन है, विग्रह और विघटन है, भौतिक और विचारधारात्मक अन्तर्विरोध है, संघटनात्मक और सामाजिक कमजोरियां है, भौगोलिक सीमाएं है और बहुत सारे ऐसे तथ्य है जो इनकी स्वीकारिता में बाधक है।

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) ऐसा मानती है और यह कहने की बेशर्मी कोई भी नेता या व्यक्ति नहीं दिखा सकता की मौजूदा व्यवस्था ही सर्वश्रेष्ठ है और इसमें किसी तत्कालीन बदलाव की जरूरत नहीं है। बदलाव की जरूरत है लेकिन सवाल है कि कैसे?

अगर कोई व्यक्ति तुलनात्मक तौर पर अधिक आजादी और अधिक अधिकारों का प्रयोग कर रहा है तो उससे यह उम्मीद की जाती है कि वह दूसरों की आजादी, अधिकार, समस्याओं और भावनाओं के प्रति अधिक सचेत रहे और संवेदनशील रहे। यह बात सम्पूर्ण मानव जाति और मनुष्य जाति के सभी भौगोलिक, सामाजिक और धार्मिक विभाजनों पर लागू होती है। परन्तु व्यवहार में ऐसा देखा जाता है कि जिसने अपने थोड़े से अधिकार प्राप्त कर लिए हैं, वह दूसरों को अधिकार देना नहीं चाहता, जिसे थोड़ी सी आजादी मिल गयी है वह दूसरे की आजादी छिन लेना चाहता है, जो अपनी बात जोर शोर से कह देना चाहता है। वह उतने ही जोर शोर से दूसरों की आवाज दबा देना चाहता है, जिसने अपने मजहब की सत्ता स्थापित कर ली वह दूसरों के मजहब को निरस्त कर देना चाहता है। इसके आलावा वह किसी के प्रति पहाड़ सा अन्याय कर रहा है तो वह उसे तिल से भी छोटा मानता है और अगर कोई उसके प्रति तिल जैसा अन्याय कर रहा है तो पहाड़ की तरह देखता है और दिखाता है। यह

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

मानवीय स्वभाव भी है और गिरा हुआ चरित्र भी है। जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) यह मानती है कि धन का आभाव आदमी के सर्वोच्च संस्कार में बाधक है। इसके विपरीत वही धन की अधिकता भी आदमी के चारित्रिक पतन का कारण बनती है। दोनों ही परिस्थितियाँ आदमी के संस्कार को गिराती है। गरीबी नक्सलवाद की जड़ है। नक्सलवादी तंत्र को मिटाया नहीं जा सकता जब तक गरीबी ना मिट जाए। भ्रष्टाचार का तंत्र मिट जाएगा तो गरीबी मिट जाएगी। यह बात मूर्खतापूर्ण है। सही तो यह है कि गरीबी ही भ्रष्टाचार को जन्म देती है। देश में चर्चा हो रही है कि भ्रष्टाचार मिटाओ, रिश्वतखोरी भगाओ, बेइमानी मिटाओ। न बेइमानी मिटती है, न भ्रष्टाचार खत्म होता है उल्टे बढ़ता जा रहा है एवं इन्हें मिटाने के लिए जितने कानून बनाते हैं उतने ही कानून को तोड़ने की सुविधा होती जा रही है। आखिर भ्रष्टाचार मिटवाएंगे किससे ? जिनसे भ्रष्टाचार मिटवाएंगे वे भी इसी गरीब देश के हिस्से हैं, वे भी उतने ही भ्रष्ट हैं जितने नक्सलवादी, इसलिए आर्थिक शक्ति के संतुलित वितरण का रास्ता अख्तियार करना ही पड़ेगा।

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) यह मानती है कि हम यह सोचते हैं एवं अपेक्षा भी करते हैं कि सरकार एवं शासन तथा संवैधानिक कानूनों के द्वारा लोगों का भ्रष्ट चरित्र बदला जाये जबकि जरूरत इस बात की है कि लोगों का भ्रष्ट चरित्र बदलकर सत्ता एवं व्यवस्था का चरित्र बदला जा सकता है।

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) नक्सलवाद को इसलिए सही मानती है कि जहाँ जीवन को साधे रखने के सारे रास्ते बन्द हैं तो मजबूरी है व्यवस्था के खिलाफ हथियार उठाना परन्तु यह तरीका असंस्कारित एवं अव्यवहारिक है एवं इससे समस्या का सामाधान नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव जाति के लिए एवं सभी वर्गों, विभाजनों के लिए भी यह एक स्वयं एक समस्या है। इसलिए हम इसका प्रतिकार भी करते हैं।

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) पूर्णतः आश्वस्त है कि भारतीय माओवादी पूरी दुनिया की क्रान्ति से सबक लेंगे तथा भारत में माओवादी क्रान्ति होगी तो वो भी भारतीय तरीके से। यह बात लेनिन और माओत्से तुंग ने भी मानी है कि अगर उनके सामने आज की तरह संसदीय तंत्र और चुनावी लोकतंत्र का रास्ता उपलब्ध होता तो शायद उन्हें इतनी बड़ी हिंसा का सहारा नहीं लेना पड़ता जितना जघन्य हत्याएँ उनके द्वारा की गयी हैं। यह कहने में थोड़ा भी संकोच नहीं है कि भारत का सबसे पहला सच्चा माओवादी क्रान्तिकारी सरदार भगत सिंह थे, लेकिन उनकी नैतिकता ऐसी थी कि असेम्बली में भी बम फेंके तो यह देख कर की कोई हताहत एवं आहत भी न हो और बात हमारी ब्रिटानी

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

हुकूमत तक पहुंच जाये, क्योंकि माओवादी क्रान्ति न तो बदला लेने की कार्यवाही है न ही मौजूदा ढांचे में कुछ स्थितियां बदल जाने की प्रतिक्रिया है बल्कि यह सम्पूर्ण शोषित एवं उपेक्षित मानव जाति का उपक्रम है जिसमें हासिये के लोगों को उनकी जनवादी मांगों के इर्द गिर्द एकजुट करके सामाजिक जनवादी क्रान्ति की ओर कूच करना जिसमें शासन को आर्थिक शक्ति के संतुलित वितरण एवं जो शोषित है उसे आगे बढ़ने का अवसर देने के लिए बाध्य होना पड़े।

जातिवाद :-

धातु की खोज के साथ ही अलग-अलग कार्यों के लिए वर्गों का निर्माण हुआ। लोहे के काम के लिए लोहार, सोने के काम से सम्बन्धित सोनार। यह पेशेवर समाज था और जो धृणित व्यवस्था हम आज देख रहे हैं इस तरह के वर्ण की व्यवस्था उस समय नहीं थी। आहिस्ता आहिस्ता, पेशेवर निपुणता और सुविधा के कारण अपने पेशेवर समूह में ही शादी करने लगे और कालान्तर में मूढतापूर्ण दृष्टिकोण के कारण एक जाति के रूप में परिवर्तन होना शुरू हो गया। कुछ जातियों का निर्माण तो क्षेत्र विशेष में बसने के कारण भाषाई और रीति रिवाजों के अन्तर के कारण जाति की उत्पत्ति हो गयी।

भारतीय महाद्वीप में जो जाति की व्यवस्था है उसका एक बहुत बड़ा कारण शास्त्रों की गलत व्याख्या के कारण हुई है। सनातन परम्परा के शास्त्रों का निर्माण समाज में सर्वोच्च संस्कार (सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण) को स्थापित करने के लिए किया गया था तथा उस शास्त्र को लिपि की खोज नहीं होने के कारण कोई ऐसी तकनीकी नीति नहीं थी जो सुरक्षित रखती। इसलिए समाज के एक हिस्से को यह जिम्मेदारी दी थी कि किस तरह शास्त्र को सुरक्षित रखना है। इसी कार्य के दौरान वर्णों का प्रादुर्भाव किया गया। जब भी जाति व्यवस्था की चर्चा होती तो चार वर्णों का जिक्र किये बगैर कोई नहीं रह सकता। ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की अवधारणा उस समय चिन्तन के स्तर के अनुरूप व्यक्तित्व के विभाजन के लिए हुआ परन्तु दुर्भाग्य की बात यह है कि विकास के साथ साथ मनुष्य के तटस्थ चिन्तन की परिस्थितियां भी गौण होना शुरू हो गयी और स्वार्थी तत्व इस वर्ण व्यवस्था का गलत ढंग से व्याख्या कर अपनी स्वार्थ को सिद्ध किया। शुरुआती दौर में शूद्र का तात्पर्य सिर्फ इतना था कि जो व्यक्ति तत्व ज्ञान की ओर आकर्षित नहीं है शूद्र है, जिन्हें तत्व ज्ञान के प्रति आकर्षण है, वैश्य ह, तत्व ज्ञान को किसी भी कीमत पर हासिल करने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति क्षत्रिय है और तत्व ज्ञान को प्राप्त कर लेने वाला व्यक्ति ब्राम्हण है। इसलिए शास्त्रों में कहा गया है कि जन्म से सभी शूद्र हैं और परिस्थितियों और

चिंतन के माध्यम से वह शूद्रता से निकलकर वैश्य, क्षत्रिय और ब्राम्हण बन सकता है जैसा कि अनेकों उदाहरण शास्त्रों में उपलब्ध है कि एक ही पिता के संतान शूद्र, क्षत्रिय और ब्राम्हण तीनों वर्गों में विभक्त थी जिस रूप में हम आज वेदों के माध्यम से जाति व्यवस्था को चार प्रमुख वर्गों में बाटे है वह तो वेद के मर्म को समझे बगैर उनके शब्दों को मूढतापूर्वक पकड़ने के कारण हुई है। यह आम मनोवृत्ति है कि यदि हम ज्ञान की ओर बढ़ेंगे तो उत्तरोत्तर ज्ञान प्राप्त करते हुए हम परम ज्ञानी बन जायेंगे और ठीक इसका उल्टा भी संभव है कि चिंतन के अभाव में मूढता की ओर बढ़ते हुए हम इस स्तर पर पहुंच जाये कि तटस्थ चिंतन की स्थिति का सर्वथा अभाव हो जाये। आर्य गोरे थे और अनार्य काले थे। वेदों के इस तथ्य को आम बौद्धिक वर्ग जिस रूप से ले रहा है वह यह बताने में अक्षम है कि आर्यों के बहुत सारे देवता काले रंग के क्यों थे? ब्राम्हणों की बहुत सारी जातियां काली हैं और शूद्रों की बहुत सारी जातियां गोरी हैं। यह एक अलग बात है कि जाति के आधार पर विभाजन लंबे समय तक रहा है तो स्वाभाविक है कि लंबे अरसे तक सुख सुविधा और ऊंचे जीवन स्तर के कारण वे गोरे एवं जो लोग मेहनतकस होंगे उनका रंग स्वभावतः सांवला होगा। जातियों का जो विभाजन है वह विभाजन राजसत्ता के परिवर्तन के कारण भी संभव हुआ। एक ही जाति में किसी राजा के समर्थन में रहने वाले लोग सत्ताच्युक्त हो गये तो निम्न जाति के श्रेणी में आ गये और सत्ता में काबिज वही समाज ऊंची जाति के रूप में जाना जाने लगा एवं ऊंची जाति के रूप में शामिल हो गया। जाति व्यवस्था जैसे जैसे मजबूत होती गयी जाति से उपजाति का निर्माण भी सतत होता रहा। ब्राम्हणों में भी कई जातियाँ जो एक दूसरे से ऊंचा एवं नीचा समझी जाती हैं। इस महाद्वीप में 4 हजार से ज्यादा जातियां हैं। कुछ जातियां तो कबीलाई आधार पर जातिगत हो गयी तो कुछ जातियों का आधार धर्म परिवर्तन के साथ साथ एक अलग जाति के रूप में हुआ। खैर हम इस विषय पर जितना गहरा अध्ययन करेंगे हम विश्लेषण जाति उत्पत्ति के कारणों को और भी गहरायी के साथ कर सकत हैं जिसे मैं बहुत महत्वपूर्ण नहीं समझता ।

वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में समाज में उनके हालात में कमोवेश पुराने समय एवं आज की परिस्थितियों के बीच थोड़ा बहुत हेर फेर हो सकता है, जो बनिया तेल बेचकर सामान्य स्थिति में था आज उस समाज का बड़ा हिस्सा बेहतर व्यवसाय के कारण विशेष आर्थिक स्थिति को हासिल कर लिया तो उंचे दर्जे में चला गया परन्तु श्रम प्रधान जातियों जैसे लोहार, कुम्हार, गड़रिया, लोनिया, मछुवारा, बिन्द, मल्लाह, बेलदार, केवट आदि जातियां वर्तमान हालात के अनुसार कमाने और खाने से ज्यादा आर्थिक रूप से अर्जित नहीं कर सकी तथा इनमें रोटी, कपड़ा और मकान की समस्या इतना विकट रूप से धारण किये हुए

है कि इनका तथा इनकी आनेवाली पिढियों का भविष्य भी अंधकारमय नजर आता है। श्रम प्रधान में श्रमिक जाति सोनार भी आती है परन्तु वह श्रम प्रधान कम पूंजीगत पेशा ज्यादा है इसलिए इनकी जातिगत स्थिति उपरोक्त जातियों से भिन्न हो गयी। पेशेवर जातियों की आर्थिक स्थिति दयनीय रहने के कारण इनकी राजनैतिक स्थिति भी दयनीय है तथा कुछ अपवादों को छोड़ दिया जाय तो इन तमाम जातियों ने अति पिछड़ा वर्ग के रूप में अपनी अलगपहचान बनाने लगी है। इन जातियों के उत्थान में सबसे बड़ा बाधा राजनैतिक ताकत का न बन पाना है। तमाम जातियों के जातिगत संगठनों से जुड़े हुए लोग जातिवाद के चलते – जातीय उपेक्षा के कारण समाज की दुर्गति बताते हैं एवं तमाम सामाजिक, जातीय कार्यकर्ता, भविष्य का भय दिखाकर के और दूसरा कोई विकल्प नहीं है, बताकर के समाज को संकीर्ण दायरे में येन– केन प्रकारेण बांध लेते हैं। बार – बार होने वाले कार्यक्रम एवं जन सम्पर्क, इन जातियों के बीच बेहतर विकल्प के चिंतन को नष्ट कर देते हैं तथा स्वार्थपूर्ण राजनीति करने वाले जातीय नेतृत्वकर्ताओं के हाथ में कठपुतली बन जाते हैं। विभिन्न जातियों के ऐसे बौद्धिक लोग जो अपनी जाति का नेतृत्व करते हैं। चुनाव के समय और अन्य दूसरे मौकों पर राजनैतिक दलों से सम्बन्ध स्थापित कर खुद का या अपने निजी परिवार के हित के लिए समझौता कर समाज को गुमराह कर डालते हैं।

कुछ जातीय संगठनों के नेतृत्वकर्ता इसलिए भी जातीय संगठनों में रुचि लेते हैं क्योंकि उनके पास व्यक्तिगत योग्यता नहीं होती है कि जिनके दम पर समाज में प्रतिष्ठित हो सके या उनका हृदय भी इतना विशाल नहीं रहता कि समाज के बीच साकारात्मक कार्यों द्वारा सम्मानजनक स्थान बना सके। उपरोक्त दोनों कार्यों में प्रतिभा एवं मानवीय भावना होना जरूरी है तथा ईमानदारी से कार्य करते हुए बगैर स्वार्थ सिद्धि के लिए ही सामाजिक कार्य कर सके। चूंकि पूरा सामाजिक व्यवस्था जाति के इर्द – गिर्द होता है इसलिए इस कार्य के लिए बहुत संघर्ष तथा अपेक्षा से अधिक उपेक्षा का भी शिकार होना पड़ता है परन्तु जातीय क्रिया कलापों से जुड़े कार्यकर्ताओं को एक तो जाति के अन्दर वैवाहिक सम्बन्धों के कारण एवं जातीय जरूरतों एवं सुरक्षा के कारण अपनत्व के साथ साथ आर्थिक सहयोग एवं मान सम्मान भी प्राप्त होता है ऐसे कार्यकर्ताओं को समाज के बीच हर तरह का कमोवेश सुविधाएं मिलती रहती है तथा स्वार्थपूर्ण राजनीति करने वाले राजनैतिक दल ऐसे कार्यकर्ताओं को चिन्हित कर अपने राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति करने में इस्तेमाल करते हैं। परिणामतः उन जातियों के आम वोटर्स तक उन्हें जाने की जरूरत नहीं पड़ती आर इन जातीय दलालों के माध्यम से ही कम मेहनत एवं कम आर्थिक खर्च से ही ज्यादा से ज्यादा बेहतर निश्चिन्तता के साथ उद्देश्य की पूर्ति हो जाती है। यह कहने में स्पष्ट रूप से

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

कोई संकोच नहीं है कि जातीय स्तर पर कार्य करने वाले सामाजिक कार्यकर्ता देर-सवेर समाज को नर्क में ले जायेंगे और आने वाली पीढ़ी को इस लायक भी नहीं छोड़ेंगे कि समाज के सामान्य लोगों से उनका बेहतर सम्बन्ध बन सकें तथा जातीय रूप से उपेक्षित – तिरस्कृत, विपन्न तथा समाज की मुख्य धारा से कटे लोगों की यह जरूरत आन पड़ी है कि वे अपने चिंतन के दायरे को बढ़ाये तथा उस चिंतन को प्राथमिकता दे जिसके माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों एवं वर्णों के बीच में जा सकें एवं उठ-बैठ सकें क्योंकि जातीय सामाजिक कार्यकर्ताओं के द्वारा इनके अन्दर जातीय कुण्ठा फैलाने के कारण बेहतर विकल्प एवं दिशा नहीं बन पाती।

सिर्फ जातीय सामाजिक संगठनों के द्वारा यह स्थिति पैदा नहीं की जाती है बल्कि वर्तमान हालात में हम देख रहे हैं कि बड़ी तेजी के साथ राजनैतिक दल बन रहे हैं। जो काम कुछ वर्षों पहले तक जातीय संगठन कर रहे थे वही काम की पुनरावृत्ति ये दल कर रहे हैं। पहले इन जातियों के पास बेहतर विकल्प नहीं था और जो अब विकल्प बन रहा है वह इतना बदतर स्थिति की ओर ले जा रहा है कि इससे इनका भला तो नहीं होगा, दिवास्वप्न को देखते – देखते पीढ़ियां गुजर जायेगी। इसमें कोई शक नहीं है कि जातीय संगठन समाज को शोषण से मुक्त कराने में एक अहम भूमिका निभाता है तो दूसरी तरफ नेतृत्वकर्ताओं की खुद को सुरक्षित रखने की इच्छा इतनी प्रबल हो जाती है कि पूरी जाति को गुमराह करके भी ये खुद को सुरक्षित रखने के लिए प्रयासरत हो जाते हैं। अगर उपेक्षित जातियों को अव्यवस्था के चक्रव्यूह से वास्तव में निकलना है तो इनके सोचने के दायरे को विस्तृत करना होगा तथा इन्हें विश्वास दिलाना होगा कि तुम्हारा विचार जितना विस्तृत होगा उतना ही तीव्र गति से इस अव्यवस्था के दलदल से निकलने की संभावना बनेगी तथा जातीय संकीर्णताओं के दायरे से निकलकर तटस्थ व्यक्तित्व के मालिक हो सकेंगे।

आरक्षण के प्रति जनवादी नजरिया :-

सरकार को यह समझने की जरूरत है कि व्यवस्था में सुधार कर देना ही पर्याप्त नहीं है उसे यह भी देखना होगा कि जो उपाय किये गये उनसे वास्तव में सुधार हो रहा है कि नहीं, निःसंदेह यदि सुधार के उपायों से उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो पा रही है तो उसका कोई मूल्य और महत्व नहीं है। जैसा कि संविधान में वर्णित विशेष अवसर के सिद्धान्त के तहत पिछड़ों और दलितों को दिये गये आरक्षण व्यवस्था की अवधारण के पीछे स्पष्ट उद्देश्य था कि आरक्षित

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

वर्ग की सभी जातियां उसकी छत्रछाया में सामान रूप से फूले फले और क्षेत्र में भी विकसित हों तथा राजनैतिक इनका प्रतिनिधित्व सामान रूप से विस्तार ले सके किन्तु मौजूदा स्थितियों में यह साफ दिखता है कि वैसा हो नहीं सका जैसा संविधान निर्माताओं की सोच थी। इस व्यवस्था में पिछड़े एवं दलित वर्ग में भी कुछ सम्पन्न और सामंती वर्ग विकसित कर दिया एवं इन वर्गों का अधिकांश हिस्सा इस व्यवस्था का लाभ नहीं ले सका और वर्तमान में अन्तर इतना व्यापक हो गया है कि इनकी प्रतिस्पर्धा को झेल पाने में इस वर्ग की शेष जातियां अपने को अक्षम महसूस कर रही है। परिणामतः पिछड़े एवं दलित वर्ग की विकसित हो चुकी जातियों की महत्वाकांक्षा एवं शोषण की शिकार इसी वर्ग की गरीब एवं उपेक्षित जातियां हो रही है।

फलस्वरूप इन वर्गों में भी एक नया वर्ग एवं अति दलित पैदा हो गया है जो अपनी मुक्ति के लिए संघर्षरत है। अति पिछड़ो को नहर का पानी तक नहीं पहुंच पा रहा है तो उसके दो ही कारण हो सकते हैं या तो नहर की सफाई सही से नहीं की गयी या फिर दबंगों के द्वारा बीच में ही नहर को बांधकर उसके पूरे पानी को अपने खेतों की तरफ मोड़ देना दिया गया है। ये दोनों ही परिस्थितियां आज के आरक्षण व्यवस्था के तंत्र में विद्यमान हैं। जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) पुनः इस व्यवस्था का मूल्यांकन करेगी एवं इसके लिए आयोग बनाकर इसमें शामिल होने वाली जातियों का नया मापदण्ड तैयार करेगी जिससे इस व्यवस्था के सही मायने में जो हकदार हैं उन तक लाभ पहुंच सके।

जनवादी एवं साम्यवादी चिंतन में मौलिक अन्तर :-

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) का निर्माण कम्युनिष्ट सिद्धान्तों का विरोध नहीं अपितु उसका विस्तार एवं विकास है। सम्पत्ति को केन्द्र बनाकर किसी वर्ग विशेष के विकास के लिए किसी अन्य वर्ग की अस्मिता को कुचलना एवं उसकी व्यवस्था को हड़पना एक तरह से विध्वंसनात्मक संघर्ष है। जिसके द्वारा सामाजिक के दोनों वर्गों में आराजकता पैदा होगी एवं सामाजिक संतुलन और बिगड़ सकता है। जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) श्रृजनात्मक संघर्ष में विश्वास रखती है। जिसमें समाज में आर्थिक समानता को लाने का मूल आधार सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण है। जनवादी एवं वामपंथी चिंतन में प्रमुख तथा निम्न अन्तर है

साम्यवाद	जनवाद
1. सामुहिक अधिनायकवाद	1. आदर्श स्वतंत्रता

2. कम्यून की व्यवस्था	2. आदर्श पारिवारिक व्यवस्था जहाँ विवाह करने की स्वतंत्रता तो होगी मगर मजबूत पारिवारिक व्यवस्था के लिए प्रेरित करना।
3. उपभोग का मापदण्ड निर्धारित नहीं है।	3. उपभोग का मापदण्ड तैयार करेंगे जिससे कम से कम भौतिक वस्तुओं का उपभोग कर अधिकतम सुख, आनन्द एवं स्वास्थ्य का अनुभव कर सकें।
4. सिर्फ सम्पत्ति पर सामुहिक एवं सार्वजनिक अधिपत्य की बात करना अर्थात् सम्पत्ति के चिंतन की ही प्रधानता।	4. सिर्फ सम्पत्ति का समान वितरण कर दिया जाय तो यह आवश्यक नहीं है कि व्यक्ति का संस्कार भी उठ सकेगा तथा संस्कारहीन व्यक्तित्व इस अवस्था में भी अराजकता ही पैदा करेगा।
5. सम्पत्ति पर सार्वजनिक आधिपत्य स्थापित कर साम्यवादी युग की स्थापना।	5. सम्पत्ति का आवश्यकता से कम या अधिक दोनों परिस्थितियां आदमी के सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व निर्माण में बाधक है। उपभोग का स्तर निर्धारित करते हुए सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व निर्माण के द्वारा स्वर्णिम युग की स्थापना करना।

वर्तमान सामाजिक एवं राजनैतिक आन्दोलन के सापेक्ष

जनवादी नजरिया :-

साथियों ,

कोई शक नहीं, जो बुनियादी समस्याएं हमारे चारों ओर नजर आ रही है तथा बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, उग्रवाद, आर्थिक विषमता, धार्मिक उन्माद इसका एक मात्र कारण इन समस्याओं का निदान समग्रता में न खोजकर काफी उथले ढंग से एक मुद्दे को प्राथमिकता देने स है। एक समस्या को ही विशेष प्राथमिकता देना वस्तुतः स्वयं को चर्चित करना, आवाम को गुमराह करना या स्वार्थ प्रेरित लक्ष्यों को पूरा करना है। व्यवस्था का नेतृत्व संवेदनशील आत्मिक व्यक्तियों, जिसका चिंतन विस्तार की ओर है के हाथों में न होकर संवेदनहीन बौद्धिक लोग जो स्वार्थ और सकीर्ण विचारधारा में गोते लगा रहे है, के पास सिमटता जा रहा है जिससे ये बौद्धिक लोग अपने अहंकार और उन्माद में समस्याओं को और भी ज्यादा जटिल बना रहे है। दूर करना तो और भी बड़ी बात है। विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिभाशाली व्यक्ति अपन- अपने अंदाज में आम जनों

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

को गुमराह कर रहे हैं। सामाजिक क्षेत्र में अन्ना जैसे सामाजिक कार्यकर्ता जो सामाजिक कूरुतियों को दूर करने के प्रयास के दायरे को तोड़कर जिद्दीपन और घटिया राजनीति कर संसद के उपर लोकपाल जैसी व्यवस्था देकर संसद की गरिमा एवं शक्ति को प्रभावहीन कर जनतंत्र का गला घोटने पर आमादा है तो दूसरी ओर आध्यात्म के सर्वोच्च चिंतन से लोगों का ध्यान हटाकर सिर्फ शारिरिक व्यवस्था के दायरे में योग को बांधकर उसकी महत्ता को करीब करीब सफलतापूर्वक गौण कर एवं गुमराह लोगों से मिलने वाले जन समर्थन के जरिये विदेशों में जमा काले धन जैसे सीमित मुद्दे उठा रहे हैं।

धार्मिक उन्माद से लेकर मंदिरों में जमा अकूत सम्पत्ति, आवश्यकता से अधिक धन जो कुछ परिवारों तक सिमटे हुए है, काला धन नहीं नजर आ रहा क्योंकि ये देश के लोगों को इन बेनामी सम्पत्तियों से ध्यान हटाकर भरमाना चाहते हैं। इस हेतु अन्ना का सामाजिक क्रान्ति और बाबा रामदेव का योग क्रान्ति मानों पूरी हो चुकी है। राष्ट्रीयता की उग्र भावना भड़काकर स्वार्थ पूर्ण राजनीति करना उसका लक्ष्य है। उग्र राष्ट्रवाद में ही ये लोग समस्याओं का समाधान खोजते हैं, जबकि सच्चाई यह है कि उग्र राष्ट्रीयता ही पूरी दुनिया में सभी मूलभूत समस्याओं की जड़ है। राजनीतिज्ञ ही चिंतन की सीमाओं को बांधते हैं जबकि साधु – संतों का लक्ष्य सदा चिंतन की सीमाओं से मुक्त कराना होता है। समय बतायेगा कि ये दोनों ही महाशय हिटलर और मुसोलनी जैसे मनोरोगी हैं।

तो आइए उनके तथा उन धूर्त बौद्धिक लोगों का जो इन्हे संरक्षण देकर आम लोगों की समस्याओं से आवाम का ध्यान हटाने का षड्यंत्र कर रहे हैं उनका कड़ा विरोध करें। राष्ट्रीय उन्माद एवं अहंकार प्रेरित आन्दोलन स्वर्णिम युग के रास्ते में बाधक है तथा यह पूरी दुनिया की मूलभूत समस्याओं की जड़ है। बौद्धिक उन्माद का यह सबसे बड़ा सबूत है कि इन्हें बड़ी गरिमामयी ढंग से सूचना तंत्र द्वारा परोसा जा रहा है। मानो आज आम जनो की सारी समस्याओं जो जड़ से जादू की छडी चलाकर दूर कर देंगे। हमें समग्रता में ही मूलभूत समस्याओं का समाधान ढूँढना है और संकीर्णवादियों के षड्यन्त्र को नाकाम कर देना है।

लोकपाल की प्रासंगिकता :-

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

सबसे अच्छी वह व्यवस्था है जो सबसे सरल और न्यायोचित है। हमने संसद का निर्माण सीधे जन प्रतिनिधियों के माध्यम से किया और जनता की सारी ताकतें उनमें समाहित कर दिया। परन्तु नेतृत्व कभी भी जनता को उन्मादी और दिग्भ्रमित कर सकता है इसलिए कार्यपालिका और न्यायपालिका के माध्यम से हमने इस संभावित खतरे को कम किया। संसद जनता के प्रति उत्तरदायी है और संसद के उपर किसी भी तरह की समिति बनाने का प्रयास करते हैं तो संसद की गरिमा को कम कर जनता की ताकत को गौण कर लोकतंत्र को बौना बनाने का षड्यन्त्र होगा। समाज में नीचे से उपर तक भ्रष्टाचार है, उसे हम भी स्वीकार करते हैं, बावजूद इसके पूरे मतदाताओं को खरीदकर दिग्भ्रमित नहीं किया जा सकता है। परन्तु संसद के उपर बैठे कुछ लोगों की समिति से सम्बन्धित व्यक्ति को कभी भी खरीदा जा सकता है। चूंकि वह महामानव नहीं होगा। प्रजातन्त्र की जो विकृति हमें नजर आ रही है उसका एक मात्र कारण प्रतिनिधि चुने जाने के दरम्यान समान रूप से सूचना तंत्र एवं साधन का मुहैया न हो पाना है। आर्थिक साधनों पर जिन स्वार्थी लोगों का वर्चस्व है, उन लोगों के द्वारा विभिन्न कारणों से जन प्रतिनिधियों पर हावी न होने के कारण उनके एकछत्र सम्राज्य में बाधा पड़ती है। उस बाधा को समाप्त करने के लिए लोकपाल जैसी व्यवस्था देने का षड्यन्त्र है। अन्ना द्वारा प्रस्तावित लोकपाल का समर्थन या किसी दूसरे रूप में लोकपाल का लाया जाना दोनों को पूर्ण रूप से खारिज करने की जरूरत है। भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए जो लोग लोकपाल का पक्ष ले रहे हैं उनकी वास्तविक मंशा भ्रष्टाचार को उच्चतम स्तर तक पहुंचाना है। भ्रष्टाचार को स्थापित करने के लिए आन्दोलन चलाया जाये यह संभव नहीं है तो चलो मुखौटा बदलकर के ही लोकपाल के जरिये ही भ्रष्टाचार को स्थापित करने का प्रयास करें, ऐसी इन तथाकथित सामाजिक कार्यकर्ताओं की मंशा है।

मजबूत लोकतंत्र या लोकपाल :-

कुछ दिवास्वप्नी ऐसे धर्मपाल की कल्पना करते हैं जिसे विधायिका , कार्यपालिका और न्यायपालिका का समस्त अधिकार प्राप्त हो एवं जो छड़ी घुमाते ही सारी समस्याओं को दूर कर दे तथा जिसके विरुद्ध कुछ भी नकारात्मक सोच लेना सबसे बड़ा पाप है। यह दिवास्वप्न की पराकाष्ठा तो लगता है परन्तु वास्तव में आज भी स्वार्थी बौद्धिक तत्वों का एक समूह है जो लोकपाल जैसी व्यवस्था देकर धर्मपाल की स्थापना की ओर देश को ले जाना चाहते हैं। लोकपाल को सिरे से खारिज करने की जरूरत है एवं संसद को सर्वशक्तिमान बनाए रखने की

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

आवश्यकता है और इसके प्रति समर्पित दृष्टिकोण रखकर ही हम प्रजातंत्र की गरिमा को बनाये रख सकते हैं। हमें इस संसद की गरिमा बनाये रखते हुए ही अपनी समस्याओं का निदान ढूँढना है।

यह बात सीधे तौर पर स्पष्ट होनी चाहिए कि संसद के उपर किसी भी पाल की व्यवस्था होती है तो जनतंत्र नामक नाव की पाल और पतवार को लबड़ेबाजी के जरिये तोड़ डालने का प्रयास है। इतिहास में वर्णित सैकड़ों दिग्भ्रमित क्रांतियां इसकी गवाह ह। गरिमामयी शब्दों द्वारा लोकपाल जैसी संस्था के माध्यम से व्यवस्था में हस्तक्षेप कर जनतंत्र को सीधे खतरे में डालकर देर सवेर हिटलरशाही व्यवस्था को देना है। हमारे लिए सबसे गौरवान्वित विषय है कि हम सबसे बड़े लोकतंत्र के निवासी है तथा कथित देशभक्त अन्ना और रामदेव जैसे लोग राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा को लहराकर राष्ट्रीय गरिमा, लोकतंत्र को धूल- धूसरित कर देना चाहते है। इन्हे हीरो साबित करने वाले तत्व निश्चित रूप से बौद्धिक रूप से जीरो हैं, मुर्दा हैं, जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से समर्थन और मदद कर रहे हैं। हमारा जनतंत्र जिन्दाबाद था , जिन्दाबाद है और जिन्दाबाद रहेगा। संसद की गरिमा इस बात का ऐलान करती है ।

अन्ना और रामदेव के आन्दोलन में तथाकथित बौद्धिक तत्वों की भूमिका में इस देश के औद्योगिक घरानों का सहयोग पूर्णतः परिलक्षित होता है वरना समाज के अन्दर व्याप्त सबसे ज्वलन्त मुद्दों को लेकर किये गये बड़े से बड़ा आन्दोलन बड़ी मुश्किल से ही राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बना होगा । जिनके पास संवेदना होगी वे उन समस्याओं को उजागर करने में रूचि लेगा , सार्थक रूप से आवाज बुलंद करेगा। सारा सूचना तंत्र अभिनेता – अभिनेत्रियों की अदाकारी, खिलाड़ियों की अजीबो – गरीब उपलब्धियों, राजनितिज्ञों की छिछोरी बयानबाजी, धार्मिक उत्सवों, समसामायिक घटनाओं, मूर्खतापूर्ण क्रियाकलापों आदि के इर्द गिर्द काम करता है और आम लोगों के बीच ऐसे परोसता है जैसे कोई ज्वलन्त आम समस्या है ही नहीं। इसी प्रचार तंत्र के द्वारा बौद्धिक स्वार्थी तत्व चाहे वह बड़े औद्योगिक घराना हो, प्रसिद्ध हस्तियां हो , प्रिंट या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया हो, के द्वारा धार्मिक और सामाजिक कार्यकर्ता जिन्होंने न कभी धार्मिक क्रान्ति किया और ना ही सामाजिक, के द्वारा ऐसे महिमा मण्डित किया जा रहा है जैसे ये मसीहा के रूप में अवतरित हुए हों। इस गहरी साजिश के तहत ज्वलन्त समस्याओं पर पर्दा डालने के लिए अन्ना और रामदेव जैसे दिग्भ्रमित और बकवादी व्यक्तित्व के माध्यम से जो प्रयास है जनता इस गहरे षड्यन्त्र को समझे और सूचना तंत्र द्वारा परोसे जाने वाली खबरों के बजाय अपनी आखों से देखने, अपने पैरों से चलने तथा अपने मुंह से बोलने के लिए

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

कृत संकल्प हो जाये तो यह निश्चित है कि मजबूत संसद ही विकल्प और एक मात्र विकल्प है।

भ्रष्टाचार क्या है ? जनवादी दृष्टि :-

समस्याओं को समग्रता से न देखकर सिर्फ अपनी सुविधा के लिए संघर्षरत रहना भ्रष्टाचार है तथा जो व्यक्ति भ्रष्टाचार को किसी तरह का संरक्षण देता है, भ्रष्ट है। सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व का मालिक बनने की आकांक्षा न रखना भ्रष्टाचार की जड़ है। जो विभिन्न रूपों में दिखाई देता है :-

- औद्योगिक घरानों का स्वयं आगे बढ़ते रहना और आम जनो की ज्वलन्त समस्याओं को अनदेखी कर देना भ्रष्टाचार है।
- अपने धार्मिक रीति- रिवाजों को गरिमामयी ढंग से प्रस्तुत करना और अध्यात्मिक चिंतन को नष्ट करने का प्रयास करना भ्रष्टाचार है।
- विभिन्न स्तरों पर जनप्रतिनिधि बनने के लिए तिकडम करना और मतदाताओं को वर्ग, वर्ण और धर्म के आधार पर दिग्भ्रमित करना भ्रष्टाचार है।
- विभिन्न स्तरों पर न्यायायिक संस्थानों में न्याय के लिए दौड़ते रहना और न्याय न मिल पाना भ्रष्टाचार है।
- अपने परिवार को सुख और विकास की धारा में ले जाने के प्रयास के दरम्यान समाज की उपेक्षा करना, भ्रष्टाचार है।
- जनतंत्र में संसद की गरिमा बहाल करने के बजाय जनता और जन प्रतिनिधियों को गलत साबित करने का प्रयास भ्रष्टाचार है।
- आत्मिक चिंतन के बाजय शारीरिक स्वास्थ्यता एवं वस्तुओं का अधिक उपभोग ही सबकुछ है, का प्रचार करना भ्रष्टाचार है।
- मेरा देश ही सबसे महान है, ऐसी उग्र राष्ट्रीयता को लेकर लोगों को भड़काना भ्रष्टाचार है।
- जनता के सेवकों को जनता से ज्यादा सुविधा और साधन देना भ्रष्टाचार है।
- जन समस्याओं से जूझते जनता को मनोरंजन और सनसनी समाचार में उलझा देना भ्रष्टाचार है।
- व्यक्तिगत कर्तव्यों का पालन न करना तथा दूसरे की उपलब्धियों पर ऊँगली उठाना भ्रष्टाचार है।

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, **Email** : drsanjayjanvadi@gmail.com

- श्रम में समान समय एवं श्रम का योगदान देने के बावजूद पारिश्रमिक में विषमता, भ्रष्टाचार है।
- स्वयं को सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति के मालिक बनाने के प्रयास किये बिना आन्दोलन की कमान हाथ में लेना भ्रष्टाचार है।

उपरोक्त भ्रष्टाचार के उन तमाम रास्तों की चर्चा किये बगैर दिवास्वप्न को दिखाने वाले लोग भ्रष्ट हैं जैसे अन्ना और बाबा रामदेव।

एक न्यायोचित व्यवस्था में काला धन क्या है

जनवादी दृष्टि :-

- वह सारे धन जो निष्क्रिय हो, तथा जन समस्याओं को सुलझाने में कारगर नहीं है, काला धन है। जैसे – मन्दिरों में रखी अकूत सम्पत्ति आदि।
- वो धन जिसका उपयोगकर्ता अपने निजी स्वार्थ, दिखावापन और अययासी के काम में आ रहा है, काला धन है।
- श्रमिकों को उचित मजदूरी न देकर स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों के लिए जमा किया गया धन, काला धन है।
- वह धन जो मानवीय आवश्यकता की पूर्ति से अधिक है काला धन है।
- क्षेत्रवाद और धार्मिक दायरे के अन्दर धन को सुरक्षित रखने का प्रयास काला धन है।
- जिस धन का उपयोग उत्पादन की प्रक्रिया में नहीं है, काला धन है।
- वो सारा धन जो सरकारी व्यवस्था के समान्तर व्यवस्था कर धन अर्जित करें, काला धन है।

ऐसे उपरोक्त कई प्रकार का काला धन है जिसे हम सब बेहतर ढंग से जानते और समझते हैं।

जनवादी पार्टी सोशलिस्ट : 2/129, विशाल खंड 2, गोमतीनगर, CMS स्कूल के पास, अम्बेडकर पार्क, लखनऊ

Mob No : 9919017417, 9455937093, Email : drsanjayjanvadi@gmail.com

निरपेक्ष धार्मिकता!

उच्चतम् संस्कार!!

न्यूनतम संघर्ष!!!

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) का लक्ष्य :-

साथियों ,

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) एक ऐसी व्यवस्था के निर्माण के लिए प्रतिज्ञाबद्ध है, जहां निरपेक्ष धार्मिकता, उच्चतम संस्कार तथा न्यूनतम संघर्ष की नीति लागू हो। निरपेक्ष धार्मिकता का तात्पर्य व्यक्तिवाद, परिवारवाद, संकीर्णवाद, वर्णवाद तथा वर्गवाद की उपेक्षा कर नीति निर्धारित करना। उच्चतम संस्कार का तात्पर्य है, व्यक्तियों को ऐसे ढंग से संस्कारित किया जाये कि किसी का प्रतिकूल परिस्थिति में भी नैतिक पतन न हो। न्यूनतम संघर्ष का तात्पर्य है, ऐसी भौतिक व्यवस्था प्रदान की जाये, जहां अतिरिक्त जीवन संघर्ष की परिस्थिति न बन सके।

“तंत्रवाद” जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) का मूल दर्शन है। पूरी प्राकृतिक व्यवस्था मानव जीवन का हिस्सा है। मानवता की रक्षा के लिए जरूरी है कि व्यक्ति, समाज और सरकार प्रकृति की रक्षा के लिए प्रतिज्ञाबद्ध हो। यह प्रतिज्ञाबद्धता ही तंत्रवाद है।

निरपेक्ष धार्मिकता की नीति अपनाकर हमें स्वयं को उच्चतम संस्कार से संस्कारित करने के लिए प्रयासरत रहते हुए न्यूनतम संघर्ष की स्थिति पैदा कर, मानवीय व्यवस्था की स्थापना के लिए प्रयासरत रहना है।

तो आइए, “एक दुनिया— एक राष्ट्र” के सर्वश्रेष्ठ चिंतन के साथ भारतवर्ष के सर्वांगीण विकास एवं व्यवस्था हेतु जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) के झंडे तले सच्चे जनवाद की स्थापना कर स्वर्णिम युग लाने के लिए कमर कस लें।

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट)